मध्यस्थ दर्शन (सह-अस्तित्ववाद)

मानवीय आचरण सूत्र

अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिन्तन

- प्रणेता -

ए. नागराज

प्रकाशक :

जीवन विद्या प्रकाशन

श्री भजनाश्रम, श्री नर्मदांचल, अमरकंटक

जिला - शहडोल (म. प्र.)

लेखक :

ए. नागराज

© सर्वाधिकार

प्रणेता एवं लेखक के

पास सुरक्षित

संस्करण : प्रथम

मुद्रण : 2003

सहयोग राशि :

रुपये

मुद्रक :

जीवन विद्या संस्थान

अमरकंटक (म. प्र.)

ग्राफिक्स-डिजायनिंग : आकाश कम्प्यूटर,रायपुर दूरभाष-2253532

परिचय

''ए. नागराज-एक जीवित अस्तित्व दर्शन''

ए. नागराज एक ऐसा नाम है, जो अमरकंटक की वादियों में चुप-चुप गूंजते रहता है। दुनिया में दो तरह के लोग होते हैं, एक वे जो अपना नाम लाउड स्पीकर लगाकर गली-मुहल्ले में गुंजाते रहते हैं, दूसरे वे जिनका नाम प्रकृति के हर स्पंदन के साथ झंकृत होते रहता है। प्रकृति ने जिसे अपनी धड़कनों में पिया हो ऐसा ही एक नाम है -''ए. नागराज''। इसका एक और भी अर्थ है-प्रकृति को भी श्री नागराज बाबा ने अपने अंत:करण में पिया है, उन धड़कनों को जिया है, प्रकृति की अंतरात्मा का साक्षात्कार किया है - इस तरह तद्गत, तल्लीन हुए बिना, प्रकृति की अंतरात्मा को पहचाना नहीं जा सकता इसी तरह तल्लीनता का असर है कि प्रकृति भी इस नाम को पीकर पुलकित होती है । एक शायर ने बहुत अच्छा लिखा है :-

हजारों साल नरगिस, अपनी बेनूरी पर रोती है।
बड़ी मुश्किल से होता है, चमन का दीदावर पैदा ॥

शायद यही दीदावर है जो इस भारत के चमन में मुश्किल से पैदा हुआ है। इस बाबा में नरगिस का नूर (तेज) और सूरज की रौशनी, जैसे साथ-साथ जीती है। सौंदर्य और सूरज जैसे, इस व्यक्ति में साथ-साथ जीवित हो उठे हों।

श्री नागराज बाबा का जन्म कर्नाटक प्रान्त के (उस समय के मैसूर राज्य) एक छोटे से गांव अग्रहार में 14 जनवरी सन् 1920 को, सूरज ढलने के बाद जब रात्रि देवी चुपचाप धरती पर उतर रही थी, तब रात्रि लगभग 6 से 8 बजे के बीच हुआ। यह स्थान वर्तमान में भी जिला-हासन है। बाबाजी के पिताश्री थे - श्री नरसिंह शर्मा माँ थी श्रीमती वेंकम्मा। गोत्र-भारद्वाज। दक्षिण भारत के सुप्रसिद्ध वेदपाठी, शास्त्राभ्यासी, कट्टरपंथी, परिश्रमी, घोर सेवाभावी, श्रेष्ठ ब्राह्मण कुल में आपका जन्म हुआ। हम लोग संस्कृत भाषा में एक सूक्ति पढ़ते हैं - ''ब्रह्म जानोति, ब्राह्मण:।'' अर्थात् ईश्वर को जानने वाला ब्राह्मण होता है। आज तो यह सवाल सर्प की तरह सिर उठाने लगा है कि क्या सचमुच ब्राह्मण लोग ब्रह्म को, ईश्वर को जानते हैं? अगर ईश्वर को नहीं जानते तो किस बात के ब्राह्मण हैं? ईश्वर के बारे में पढ़ने के लिए बहुत से ग्रंथ हैं, जिसमें वेदों का प्रचलन एवं सम्मान सर्वाधिक है। बाबाजी का कुल वेदमय रहा - निरंतर वेद ध्वनि, वेद चर्चा होती रहती थी - जैसे घर के छप्पर से भी वेद की ऋचाएं फूट रही हों। परंपरानुसार बाबाजी ने भी अपने मामा चिन्नप्पा से जो इस देश के सुविख्यात प्रकांड पंडित थे - 11 उपनिषदों एवं वेदान्त दर्शन को पढ़ा। उन्होंने उस समय की गंभीर और प्रतिष्ठित श्री विद्या उपासना तंत्र विधि से पूर्णाभिषेक कृत्य को सम्पन्न किया।

बाबा को 16-17 वर्ष की उम्र तक पढ़ने से विरक्ति रही, उसके बाद भी पढ़ने की बहुत प्रवृत्ति नहीं रही। परिवार सहज उपासना अभ्यास में प्रवृत्ति ही। परिवार के सम्मान को यथावत बनाए रखने का उद्देश्य बना रहा।

बाबाजी की मां को आयुर्वेद एवं ज्योतिष शास्त्र का बहुत अच्छा अभ्यास था। अत: बाबाजी ने आयुर्वेद एवं ज्योतिष का अध्ययन अपनी माताजी से ही किया। बाबाजी 3 भाई, 3 बहिनें थीं। बाबाजी अपने भाइयों में मंझले हैं।

परिवर्तन संसार का नियम है। सोया हुआ आदमी भी करवट लेता है तो जागने के लिए उत्सुक आदमी की जिंदगी में भी परिवर्तन स्वाभाविक था। बाबाजी ने गंभीर साधना के निमित्त पंपापति (हम्पी, आंध्र) में लगभग 1 माह एकान्तवास किया। वे श्री विद्या की उपासना में निमग्न रहे। शक्ति विद्या के मूल स्वरूप का नाम 'श्री विद्या' है। उपासना के लिए श्री देवी को तीन अवस्थाओं में में स्वीकारा गया है- बाला, त्रिपुर सुन्दरी, राज राजेश्वरी। परम्परा में यही तीन अवस्थायें पाई जाती हैं। इन तीनों अवस्थाओं से इंगित स्वरूप, देवी का बाल्य, यौवन तथा वृद्धावस्था है। ऐसा बताया गया है। बाबा के परिवार में श्री विद्या उपासना तंत्र की परम्परा थी ही। उपासना तंत्र अर्थात् मंत्र से स्वयं अभिभूत होना, मंत्र, यंत्र, पूजा स्थली एवं पद्धति से अभिभूत होना। श्री विद्या का पंचाक्षरी, पंचदशी, राजराजेश्वरी षोडषी मंत्र से बाबा दीक्षित रहे। देवी देवताओं के रूप उन्हें ध्यान में दिखाई पड़ते थे, याने स्पष्ट होते थे। बाबा के अनुसार आदमी का मन ही ध्येय और ध्यान के दो स्वरूपों में काम कर देता है। देवी देवताओं की जीवित मुद्रा भंगिमा दिखाई पड़ती थी। यहां से बाबा कन्नड़ भाषा के लोकप्रिय कवि हो गये। अपनी कविता पाठ से हजारों श्रोताओं को रात-रातभर वे मंत्रमुग्ध करते रहे। लगभग दो वर्षों तक उनका कवि जीवन प्रभावी रहा। याने 22 से 24 वर्ष की उम्र तक। लेकिन जनता को रात-रातभर कविता सुनाने से क्या हुआ? प्रयोजन कुछ दिखाई नहीं पड़ा इसलिए कविता करने से विरक्ति होती गई। उस समय के प्रचलन के अनुसार वे ज्यादातर भक्ति और विरक्तिवादी कविताएं लिखते रहे। इस बीच वेदान्त दर्शन को समझने की इच्छा होने लगी तो विधिवत उन्होंने अपने मामा लोगों के सान्निध्य में वेदान्त का अध्ययन किया।

बाबाजी ने अपने गुरू श्रृंगेरी मठ के पीठाधीश्वर श्री चंद्रशेखर भारती के कहने पर सन् 1941-42 में भगवान शिव की मोक्षपुरी काशी में रहकर साधना की। वहां भी वे भिक्षा मांगकर नहीं, अपनी रोटी स्वयं कमाते, शेष धन को जरूरत मंदों में बांट देते तथा ध्यान जप करते रहे। दक्षिण भारत के सुप्रसिद्ध संत श्री रमण महर्षि के प्रति भी बाबाजी की बड़ी आस्था रही। बाबाजी ने रमण महर्षि के दर्शन कर उनसे आशीर्वाद प्राप्त किया पर समाधान नहीं मिला, तृप्ति नहीं मिली।

काशी से लौटकर 22 वें वर्ष में सन् 1942 में बाबाजी का विवाह श्रवण बेलगुड़ा के हिरगना हल्ली मंजैया की एक मात्र संतान सौ. नागरत्ना देवी के साथ सम्पन्न हुआ। श्री नागरत्ना देवी का जन्म आश्विन नवरात्रि में शुक्ल पक्ष चतुर्थी तिथि में याने 10-10-1926 को हुआ था। विवाह के पश्चात् सन् 49 तक बाबाजी मैसूर, बैंगलोर, मद्रास में रहे। उन्होंने वहां पेंसिल बनाने का एक कारखाना लगाया। सन् 1939 से सन् 1949 तक इस तरह जीविकोपार्जन चलते रहा। सन् 1949 के बाद मन इस कार्य से उचटने लगा। आजादी के बाद संविधान को देखने पर उसमें राष्ट्रीय चरित्र का कोई स्वरूप नहीं मिला।

राष्ट्रीय चरित्र अर्थात् राष्ट्र के सभी मनुष्यों के आचरण की एकरूपता का कोई स्वरूप इसमें नहीं मिला। देश, समाज की दयनीय हालत और अपने भीतर उठे प्रश्नों से बेचैनी बढ़ती गई। फलस्वरूप इन सब मामलों में शोध अनुसंधान की जरूरत है ऐसा उन्हें लगते रहा। साथ ही इस धरती की मानव परंपरा में **मैं भी एक जिम्मेदार व्यक्ति हूँ** - मुझे ही यह शोध अनुसंधान में प्राण लगाना चाहिए - ऐसा गम्भीर भाव उन्हें मथता रहा ।

उस समय के सुप्रसिद्ध योगी अरविंद, महात्मा गांधी, महर्षि रमण सभी से मिलकर बाबाजी अपनी जिज्ञासा शान्त करने की आशा लगाए रहे पर तृप्ति नहीं मिली। किसी को अपने प्रश्नों से निरूत्तर कर देना उनका आशय नहीं था बल्कि वे अपने प्रश्नों का उत्तर चाहते थे अपने लिए तृप्ति। राष्ट्रीय आचार संहिता का स्वरूप क्या है? मनुष्य में बंधन और मोक्ष का स्वरूप क्या है? यही मूलभूत प्रश्न थे उनके जीवन में। अपने प्रश्नों का उत्तर खोजना, इसके लिए अनुसंधान करना उनकी जिम्मेदारी थी। अत: उन्होंने अपना घर-बार, कारखाना, मित्र, परिजन सब छोड़ दिया। वन्दनीया माताजी (उनकी सहधर्मिणी) भी उनके साथ सर्वस्व त्यागकर अमरकंटक की पुण्य भूमि में भगवती नर्मदा के उद्गम स्थल पर पहली बार आई। उस दिन 31 दिसम्बर सन् 1949 की रात्रि थी। रात सन्नाटे में घिरी अमरकंटक की एकान्त पहाड़ियाँ। रात के सन्नाटे को चीरती मंदिर की टुनटुनाती हुई आरती की घंटियां। सब कुछ नया-नया था और मन में वही दहकते सवालों की तपन थी। दूसरे दिन सन् 1950 का पहला दिन था **1 जनवरी सन् 1950।**

ऊषा ने अंगड़ाई ली। जीवन ने भी करवट ली हो जैसे। विशाल फैले हुए वन, नर्मदा का शान्त उद्गम, सुबह से शाम तक सन्नाटा, थोड़े से लोग और प्रकृति, सन्नाटा, एकान्त के बीच जीता हुआ आदमी? यह आदमी क्या है? परमात्मा क्या है? प्रकृति क्या है? इनका आपस में कोई संबंध भी है? सवाल ही सवाल फणीधर सर्प की तरह फुफकारते हुए सवाल ही सवाल - उत्तर कहीं नहीं। सर्पिल सवालों के बीच तनकर खड़ा एक अकेला आदमी, जैसे भगवान शिव के अंग-अंग में नाग लिपटे होते हैं। सवाल डसते भी हैं और आदमी को अपनी फुफकार से जगाते भी हैं। यह सवालों की फुफकार से जागे हुए एक आदमी की अंतर्कथा है।

मैं महीनों इन पहाड़ियों में घूमते रहा हूँ - एक अजीब सी चुप उदासी के सिवा, इन पहाड़ों और जंगल की आत्मा का कुछ पता नहीं चलता है। इन गुमसुम पहाड़ियों में ब्रह्मगिरि पर्वत पर बाबा लगातार 19 वर्षों तक तरह-तरह की तपस्या में निमग्न रहे। तब इन पहाड़ियों ने अपना हृदय खोल दिया? प्रकृति का अनुपम सौंदर्य उजागर हुआ। अस्तित्व सहज अंतरात्मा ने अपने बंद दरवाजे खोले - अस्तित्व का प्रयोजन स्पष्ट हुआ। प्रकृति और आदमी जिस सत्ता में संचालित उद्भासित हैं वह व्यापक उद्भासित हुआ। साधना की सर्वोच्च अवस्था निर्विकल्प समाधि के अनुभद से वे एकाकार हुए। निर्विचार अवस्था मनुष्य के लिए आश्चर्यजनक अनजाना। समाधि में प्रश्न खो जाते हैं, पूछने वाला गुम हो जाता है।

पर वे जो चाहते थे, उसका उत्तर उन्हें समाधि में भी नहीं मिला। मौन और भक्ति-विरक्ति के बदले वे प्रयोजन को खोजते रहे। पातंजल योग सूत्र में लिखित, संयम नाम की एक स्थिति है। बाबा ने लगभग 6 माह तक आकाश में संयम किया। तब अचानक सृष्टि का संपूर्ण रहस्य, मानव जीवन का प्रयोजन, उसका स्वरूप, परमात्मा प्रकृति और परमात्मा की स्थिति - सब एकदम स्पष्ट हो गये। इससे उनको परम तृप्ति मिली, परम विश्राम को वे उपलब्ध हुए। जो उनको मिला मूल प्रश्न के उत्तर के रूप में बंधन, जीवनगत भ्रम के रूप में पीड़ित होने की घटना और जीवन ही जागृत होकर भ्रम मुक्ति का अनुभव करने की सुखद घटना स्पष्ट हुई । जागृत मानव में परंपरा में

मानवीयता पूर्ण आचरण केन्द्रित सार्वभौम आचार संहिता रूपी संविधान मिला। उसे ही वे अपने मध्यस्थ दर्शन ''सह-अस्तित्ववाद'' में पिछले 26 वर्षों से लोगों को बताते रहे हैं ।

एक आश्चर्यजनक किन्तु अत्यंत साधारण से किसान दिखने वाले एक सद् गृहस्थ साधु के परम साक्षात्कार से निसृत परम ज्ञान, जीवन ज्ञान अस्तित्व दर्शन - मानवीयतापूर्ण आचरण की यह माला आम आदमी को अर्पित है। उन्हें देखकर डर नहीं लगता बल्कि अपने में एक आत्म विश्वास जागता है कि बाबा जैसा एक साधारण व्यक्ति, जीवन के परम सत्य को जब पा सकता है, तो हम लोग भी क्यों नहीं पा सकते? हम सत्य को उपलब्ध हो जाएं, इसमें क्या शंका है।

अमरकंटक की पहाड़ियां इस व्यक्तित्व की सुगंध से भर गई हों जैसे उसी सुगंध की एक लहर है, एक फैलाव है यह प्रबंध - आपकी अपनी अस्मिता आपके अपने वैभव का संगीत, जो बाबा की चिंतन रूपी बांसुरी से आनंद के आमंत्रण बिखेर रहा है आओ, अमृत के पुत्रों तुम्हारा स्वागत है इस ज्ञान के सुगंधित सागर में सराबोर होने अपने 'स्व' को पहचान कर उसके वैभव में आल्हादित होने आमंत्रण है। आज ईसा के शब्द कितने सटीक हो गए हैं, ''मांगो तुम्हें मिलेगा, खोजो तुम पाओगे, खटखटाओ तुम्हारे लिए खोल दिया जावेगा।''

नंदिनी, राजन

जिला-दुर्ग (छ.ग.)

प्राक्कथन

मैंने इस तथ्य को भली प्रकार से समझा है कि हर मानव मानवत्वपूर्वक ही अपने वैभव को प्रमाणित करना चाहता है। परंपरा में सर्व मानव किसी न किसी समुदाय या देश के रूप में, धर्म के रूप में, राज्य के रूप में स्वीकृत हुआ देखा गया। इसी के साथ जाति, मत, वर्ग, सम्प्रदाय, पंथों के रूप में होना भी स्पष्ट है। इन सभी विधियों से समुदाय चेतना विकसित हुई न कि मानव चेतना। इसके साथ यह भी गवाहित है कि अभी तक धरती पर होने वाले समुदायों में से कोई ऐसा समुदाय नहीं है जिसको सभी स्वीकारते हों इसलिए मानवत्व की आवश्यकता सहज रूप में समझ में आई। इसके लिए आवश्यकीय सभी शोध-अनुसन्धान किए।

जीवन का मौलिक अथवा सर्वमानव का मौलिक प्रश्न सुखी होने का है क्योंकि सर्व देश-काल में सुखी होने के आशय से ही जंगल से ग्राम, ग्राम से नगर यात्रा मानव ने की। इस यात्रा में आहार, आवास, अलंकार, दूर-श्रवण, दूर-गमन, दूर-दर्शन संबंधी सभी वैभव मानव को करतलगत हुए। जब मैंने मानव की परिभाषा को समझा तो यह पाया कि सर्व मानव मनाकार को साकार करने वाला और मन:स्वस्थता को प्रमाणित करने वाला है। इस पर ध्यान देने से पता लगा कि मानव मनाकार को साकार करने में समर्थ हो गया है लेकिन मन:स्वस्थता को प्रमाणित करने में असमर्थ है अथवा प्रयत्नशील है। इसी कारणवश यह निश्चय हुआ कि सर्व-मानव मानवत्व सहित ही मन:स्वस्थता का प्रमाण प्रस्तुत करेगा, फलस्वरूप ही अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था इस धरती पर प्रमाणित होगी। तभी मानव अपराध परंपराओं से

मुक्त हो पाएगा, धरती को रोगी बनाने के कार्यक्रम से मुक्त होगा।

मानव परंपरा में विभिन्न प्रकार से साधना, उपासना, अभ्यास की बात कही गई है। यह सब स्वांत: सुख के अर्थ में रहा जबकि मानवत्व सर्व-शुभ के अर्थ में होना अनुभव किया है। क्योंकि अस्तित्व में प्रत्येक एक अपने त्व सहित व्यवस्था, समग्र व्यवस्था में भागीदारी के रूप में ही वैभवित है, अतएव मानव की मानवत्व सहित व्यवस्था, समग्र व्यवस्था में भागीदारी स्वाभाविक है।

मानव में मानवत्व प्रमाणित होने के लिए आवश्यकीय पूरा वाङ्मय प्रस्तुत किया जो मध्यस्थ दर्शन, सह-अस्तित्ववाद है जिसमें मानवीय शिक्षा, मानवीय संविधान, मानवीयतापूर्ण आचरण और मानवीय व्यवस्था बोध सुलभ होने की व्यवस्था है। इसी क्रम में जीवन ज्ञान, अस्तित्व दर्शन ज्ञान, मानवीयतापूर्ण आचरण ज्ञान सम्पन्न होने की व्यवस्था है। ये सब एक-दूसरे से जुड़ी कड़िया हैं इसमें से जीवन ज्ञान ही जीवन विद्या के रूप में स्पष्ट हुआ। इसे एक अभियान के रूप में अर्थात् अभ्युदय के अर्थ में होना अनुभव किया गया।

जीवन विद्या को बोध कराने के लिए और उसके मूल में ज्ञान, विज्ञान, विवेक सम्पन्नता सहज सुलभ अथवा सर्व सुलभ होने के लिए निम्न सभी ग्रंथ प्रस्तुत हुए :- मानव व्यवहार दर्शन, मानव कर्म दर्शन, मानव अभ्यास दर्शन, मानव अनुभव दर्शन।

समाधानात्मक भौतिकवाद, व्यवहारात्मक जनवाद, अनुभवात्मक अध्यात्मवाद, व्यवहारवादी समाजशास्त्र, आवर्तनशील अर्थशास्त्र, मानव संचेतनावादी मनोविज्ञान, जीवन विद्या : एक परिचय।

इन सभी वाङ्मय का प्रयोजन मनुष्य में ही प्रमाणित होना है। अध्ययन तो समझदार मानव ही कराएगा अर्थात् समझदार मानव से ही अध्ययन सार्थक होगा। जीवन विद्या शिविरों में यह कराया जाता है। मानवीय शिक्षा संस्कार की अवधारणाओं को हृदयंगम करना आवश्यक है जिसके साथ मानवीय मूल्य, चरित्र और नैतिकता प्रमाणित होना आवश्यक रहेगा। हर मानव जीने में समझदारी को प्रमाणित करेगा।

प्रस्तुत ग्रंथ मानवीय आचरण सूत्र मानवत्व को बोध कराने में सहायक होगा। सम्पूर्ण वाङ्मय सूचना ही है न कि प्रमाण। इसके साथ यह भी मेरी स्वीकृति है कि सभी मंत्र, यंत्र और पुस्तकों से प्रत्येक जागृत मानव बड़ा है। अतएव मानव सहज समझदारी के लिए ही उक्त वाङ्मय प्रस्तुत है। यह प्रमाण परम्परा में ही मानव वैभव सहज होगा, यह मेरा विश्वास है।

ए. नागराज
प्रणेता एवं लेखक -मध्यस्थ दर्शन, सह-अस्तित्ववाद
पो. अमरकंटक, श्री नर्मदा मंदिर के सामने
जिला शहडोल (मध्य प्रदेश)

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	अध्याय	पृष्ठ सं.
1.	भ्रम, भ्रान्त मानव, मानवेच्छा	1–11
2.	जीवन लक्ष्य, मानव लक्ष्य	12–15
3.	जागृति, जाग्रत परंपरा, जाग्रत मानव	16–24
4.	सार्थकता, प्रयोजन, नियति	25–30
5.	सह–अस्तित्व, व्यवस्था	31–38
6.	मानव परंपरा, सर्व मानव	39–46
7.	ज्ञान, समझदारी, अध्ययन, संज्ञानीयता	47–55
8.	जीवन, दृष्टापद	56–60
9.	अखण्ड समाज – सार्वभौम व्यवस्था	61–65
10.	स्वराज्य स्वतंत्रता, स्वत्व	66–68
11.	ब्रह्म वर्चस्व	69–70
12.	अनुभव–प्रमाण	71–73
13.	मानव – मानवत्व	74–84
14.	मानवत्व सहज प्रमाण सूत्र	85–95

1. भ्रम, भ्रान्त मानव, मानवेच्छा

1.1 समुदायों में परस्पर द्रोह-विद्रोह, छल-कपट, दम्भ-पाखंड, शोषण और युद्ध मतभेद, शंका-कुशंका की घटनाएं मानव में, से, के लिए अस्वीकृत होते हुए भी बार-बार दुहराई जाती हैं। इसका कारण मानव का भ्रमित रहना है जबकि निर्भ्रमता मानव सहज आवश्यकता है।

1.2 हर भ्रमित समुदाय हर देश काल में जाति, मत, सम्प्रदाय, नस्ल-रंग-वर्ग, भाषावादी धर्म, पंथ के आधार पर धर्म और राज्य संस्था को मानते रहे हैं। यही अपना-पराया का भी आधार माना जाता है। यही सम्पूर्ण समस्याओं का कारण है।

1.3 हर समुदाय परस्पर विरोधी बन चुका है। एक से अधिक समुदाय किसी न किसी भूखण्ड में रहते हुए इसे अखण्ड देश (स्वराज्य) माने रहता है। ऐसे भूखंडो को ही सार्वभौमिकता, अखण्डता, अक्षुण्णता सम्पन्न देश, राष्ट्र, राज्य माना जाता है। ऐसे देश, राज्य, राष्ट्र में भी समुदाय मान्यता के आधार पर एक-एक शक्ति केन्द्रित शासन संविधान होना पाया जाता है। और समुदायवादी मानसिकता ही मानव-परम्परा में कुण्ठा, निराशा, परस्पर युद्ध का कारण है।

1.4 समुदाय मानसिकता ही अखण्डता का विखण्डन सूत्र एवं तद्नुसार कार्य-व्यवहार ही अव्यवस्था है।

1.5 भ्रमित मानव ही विखण्डन का साक्ष्य, परस्पर द्रोह-विद्रोह, मतभेद, शोषण, युद्ध और युद्ध प्रवृत्ति है। इसी के साथ छल-कपट, दम्भ पाखण्ड, साम-दाम-भेद-दण्ड भी है।

1.6 समझदारी पाँच प्रकार अर्थात् मानवीय शिक्षा-संस्कार, न्याय-सुरक्षा, उत्पादन-कार्य, विनिमय-कोष, स्वास्थ्य-संयम कार्य से - पहचान प्रकट रहता है। यह हर नर-नारियों में, से, के लिए मौलिक अधिकार व समाधान है। समझ न होने की स्थिति में भ्रम प्रवृत्तियाँ प्रभावकारी रहती हैं जो हर नर-नारियों में, से, के लिए समस्या, क्लेश, कष्ट के रूप में पाई जाती हैं।

1.7 भ्रमित मानव में भी जागृति की प्यास है।

1.8 सर्व मानव समुदाय भ्रमित रहने के कारण पीढ़ी-दर-पीढ़ी मानव भ्रमित होता आया स्पष्ट है।

1.9 आदि काल से 20वीं शताब्दी के 10वें दशक तक मानव का अध्ययन जाग्रति के अर्थ में विकसित नहीं हो पाया। 21वीं शताब्दी के पहले दशक तक अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिन्तन ही 'मध्यस्थ दर्शन' सह-अस्तित्ववाद विकल्प के रूप में मानव में, से, के लिए स्पष्ट रूप से प्रस्तुत हुआ जिसकी सूत्र व्याख्या से जागृति सर्व सुलभ होने की व्यवस्था है।

1.10 मनाकार को साकार करने में मानव सफल है। मन: स्वस्थता को

प्रमाणित करना शेष है अर्थात् नियति सहज विधि से प्रतीक्षारत है।

1.11 मानव परम्परा में अनेक जाति, मत, सम्प्रदाय, वर्ग, पंथ, भाषा, देश प्रभेद के आधार पर जितना प्रयोग हुआ उससे सन् 2000 तक वैर-विरोध समाप्त नहीं हुआ अपितु मानव में निहित अमानवीयता का भय अति हो गया। इसी भयवश मानव का अस्तित्व खतरे में घिर गया। इसलिए हर मानव के लिये अपनी स्वत्व, स्वतंत्रता व अधिकार को भले प्रकार से समझना, जीना आवश्यक हो गया है।

1.12 सन् 2000 तक इस धरती पर मानव विभिन्न समुदाय के रूप में चलते आये हैं। इनकी मानसिकता व परम्परा के साथ पाई गई प्रयोग-प्रक्रिया कार्यवाही के अनुसार दमन, दलन, संहार से सभी समुदाय, सभी देश प्रभावित हुए।

1.13 विगत सुदूर से व्यक्तिवाद, समुदायवाद के आधार पर किये गये सभी प्रयोग अभ्यास-कार्य-व्यवहार परम्परा में समुदाय, परिवार और व्यक्ति सुरक्षित नियंत्रित होना नहीं पाया गया।

1.14 असफलता के मूल में अपना पराया के रूप में सोच-विचार को समझा और माना यही भ्रम रहा।

1.15 भ्रम को सत्य या सही स्वीकारने मात्र से अथवा भ्रम पर आधारित

कार्य-व्यवहार से नकारात्मक फल होना ही पुनः शोध-अनुसन्धान, सोच-विचार, निश्चयन की आवश्यकता होना है।

1.16 21वीं शताब्दी के मानवों के अध्ययन व घटनाओं के सर्वेक्षण से स्पष्ट है कि वे भ्रमवश ही अनेक समुदायों में विभक्त हो समस्या ग्रस्त और परेशान हैं।

1.17 समुदायों में माने गए पावन ग्रंथों के आधार पर, दर्शन, विचार, शास्त्रों के उपदेशों के अनुसार जितने भी व्यक्ति पूरी निष्ठा से साधनारत, अभ्यासरत रहे, और हैं, इन सबके सम्मिलित फल परिणाम में 21वीं शताब्दी के प्रारंभिक वर्षों तक निरीक्षण-परीक्षण के उपरान्त कोई समुदाय द्रोह-विद्रोह, शोषण, युद्ध, असुरक्षा, भय प्रलोभन से मुक्त नहीं हुये।

1.18 भ्रमित मानव भी सुरक्षित रहना चाहता है।

1.19 भ्रमित मानव भी न्याय सुलभता चाहता है।

1.20 भ्रमित मानव भी न्याय पाना चाहता है।

1.21 सर्व मानव भ्रमित रहते हुए भी अन्य के संयत रहने की अपेक्षा करता है और स्वयं मनमानी और अनियंत्रण को बुद्धिमानी मानता है। यही विधि शासन-प्रशासन परिस्थितियाँ होने के रूप से वर्तमान है (शिक्षा-दीक्षा व संस्कारों की भी यही स्थिति है)।

1.22 भ्रमित मानव, अवसरवादी भय से त्रस्त और प्रलोभन में लिप्त प्रवर्तनशील है।

1.23 जन–धन, पद व अधिकारों का सुदूर विगत से किया गया दुरूपयोग और उसका परिणाम द्रोह–विद्रोह, शोषण, युद्ध, भय, प्रलोभन प्रवृत्तियों के रूप में रहा, जिसकी सार्वभौमिकता नहीं हो पाई।

1.24 भ्रमवश दिशाहीन कल्पनाशीलता एवं कर्मस्वतंत्रता के कारण मानव में भय, प्रलोभन, चार विषय, सुविधा, संग्रहपूर्वक समृद्ध सुखी होने की आशा पायी जाती है। मानव भ्रमवश शरीर को जीवन मानता रहा है।

1.25 भ्रमित मानव आतंक से मुक्त नहीं है। पशु–मानव व राक्षस–मानव में समस्याओं से घिरे रहते हुए भी जागृति सहज संभावना स्वीकृत रहती है।

1.26 भ्रमित नर–नारी के समस्त कार्य–व्यवहार में शरीर ही जीवन होना प्रकाशित रहता है।

1.27 हर गलती करने वाले भी यह स्वीकार करते हैं कि गलती व अपराध सह–अस्तित्व विरोधी है। हर मानव न्याय की अपेक्षा करता है जबकि भ्रमवश सम्बन्धों की पहचान स्पष्ट नहीं रहती।

1.28 जागृति क्रम में पाये जाने वाली मानव संवेदना की प्रेरणा क्यों और कैसे का उत्तर पाना चाहती रही। उत्तर में ईश्वर प्रेरक है बताया गया। दूसरे उत्तर के अनुसार शरीर रचना को प्रेरणा और चेतना का प्रकटन माना गया। ये दोनों निष्कर्ष यथार्थता से भिन्न रहे है।

1.29 मानव का अनेक जाति, मत–सम्प्रदाय जन्य धर्म कल्पना में फंसना ही मानव से मानव की असुरक्षा है। यही अमानव में पाये जाने वाले द्रोह–विद्रोह, शोषण और युद्ध का कारण है।

1.30 मानवकुल भ्रमवश अनेक समुदायों में गण्य है। जागृतिपूर्वक अखण्ड समाज के रूप में स्पष्ट हैं।

1.31 हर भ्रमित मानव कल्पना के मूल में भय–प्रलोभन, विवशता रहते हुए भी सुख, शान्ति, सत्य को पहचानने की कामना है।

1.32 भ्रमित मानव में, से, के लिये मनोकामनायें भव व प्रलोभन से ग्रसित रहती है और सुख की आशा बनी रहती है।

1.33 भ्रमित मानव संवेदनात्मक प्रलोभनों से सुखी होने की अपेक्षा किया रहता है। जबकि समझदारी ईमानदारी जिम्मेदारी सहित की गई भागीदारी, फल परिणाम के आधार पर सुखी होना पाया जाता है।

1.34 मानव ने पदार्थावस्था की वस्तुओं का शोषण किया और प्राणावस्था का अधिकांश शोषण किया, जीव संसार की हत्या, मानव समुदायों, परिवार राज्यों की परस्परता में द्रोह-विद्रोह, शोषण, युद्ध, विध्वंस किया है। इसे बारम्बार दुहराया है। परस्परता में अपराधों को किया है। अभी भी सामान्य जन मानस में मूल्य, चरित्र, नैतिकता, व्यवस्था व समझदारी अपेक्षित ही है।

1.35 मानव ज्ञान, भक्ति, उपासना, योग, अभ्यास के रूप में रहस्यमय उपलब्धियों के लिये पीढ़ी से पीढ़ी प्रयास करते आया है जिसका परिणाम प्रमाण परम्परा के रूप में शून्य रहा है।

1.36 मानव समुदाय व परम्परावादियों के दिशा-विहीन होने का प्रधान कारण अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिन्तन सम्पन्न न होना ही रहा जो नित्य समीचीन है।

1.37 मानव में सदा-सदा से सभी समुदायों में परस्परता सामंजस्यता नहीं हो पाई।

1.38 किसी समुदाय में सत्कार्य, सद्-विचार सार्वभौम स्वीकृति के अनुरूप नहीं हो पाया। इसका कारण ईश्वरवाद, भौतिकवाद, अधिभौतिकवाद, देवी-देवतावाद से अनुप्रमाणित सभी मनुष्यों का व्यक्तिवादी-आदर्शवादी होना ही रहा।

1.39 मानव प्रजाति में जागृति पर्यन्त आहार, विहार, व्यवहार का निश्चयन नहीं होता। जागृति पूर्वक ही हर मानव में आहार,

विहार, व्यवहार रूपी आचरण निश्चित होता है।

1.40 कुछ आयु के अनन्तर हर मानव सन्तान स्वयं को समझदार मानता है।

1.41 संग्रह की प्रवृत्तियाँ असुरक्षा के प्रभाव से; भोग, बहुभोग और अतिभोग की प्रवृत्तियाँ प्रलोभन के आधार पर हैं।

1.42 भ्रमित मानव भय व असुरक्षात्मक पीड़ा से राहत पाने के लिए ही संग्रह व भोग प्रवृत्तियों के साथ विवश रहता है।

1.43 संग्रह के लिये शोषण होना पाया जाता है।

1.44 शोध कार्य जो परम्परा विधि से उपलब्ध है उसे वांछित योग व रूप देने के लिए की गई ज्ञान-विचार-योजना व कार्य-योजनाएं हैं। ये अज्ञात को ज्ञात, अप्राप्त को प्राप्त करने के अर्थ में है। प्राप्ति क्रम आहार, आवास, अलंकार, दूर श्रवण, दूर गमन, दूर दर्शन के रूप में है - जब कि जागृति सह-अस्तित्व ही ज्ञान, विज्ञान, विवेक रूप में है।

1.45 अनुसन्धान प्रधानत: अज्ञात को ज्ञात करने के लिये सम्पन्न होता है।

1.46 विगत से भक्ति, प्रेम, अनन्यता व तन्मयता में, ज्ञान समाधि में,

सार्थक होने का आश्वासन है। इन दोनों का अध्ययन (शिक्षा), संविधान, व्यवस्था व आचरण-संस्कृति सभ्यता सहज प्रमाण परम्परा नहीं हो पाया।

1.47 परम्परा का तात्पर्य शिक्षा-संस्कार अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था व सार्वभौम समाधान बीसवीं शताब्दी तक स्थापित नहीं हो पाया। भौतिक विचार परम्परा के अनुसार, संरचना के आधार पर चेतना निष्पत्ति बताई जाती है जबकि ईश्वर वादी विचार के अनुसार चेतना से वस्तु की निष्पत्ति बताई जाती है। इन दोनों का शोध करने के उपरान्त, अनुसन्धानपूर्वक पता लगा कि सह-अस्तित्व नित्य वर्तमान, परम सत्य होना पाया गया। इसमें उत्पत्ति की कल्पना ही गलत निकली।

1.48 मानव लक्ष्य सार्थक, सर्व सुलभ होने पर्यन्त अध्ययन शोध में प्रवर्तित अनुसन्धान रहेगा ही।

1.49 मानवीयता मानव में सफल होने के अर्थ में सम्पूर्ण अनुसन्धान, शोध, कार्य-व्यवस्था, अभ्यास बदलाव होना ही स्वाभाविक है।

1.50 सर्व शुभ के अर्थ में सम्पूर्ण प्रयासों की सार्थकता है।

1.51 शुभाकांक्षा सर्व मानव में निहित है।

1.52 व्यक्तिवाद विशेषतया पराधीनता को स्वीकारे रहता है। जबकि

हर नर-नारी समानता सहित पहचान प्रस्तुत करना चाहता है साथ में सुखी रहने की आवश्यकता बनी रहती है।

1.53 सभी जीव संसार अपने-अपने प्रजाति रूपी समुदायों के रूप में जीता हुआ देखने को मिलता है। सभी मानव एक ही प्रजाति के होते हुए परस्परता में निश्चित पहचान सहित जीना स्पष्ट नहीं हो पाया इसका कारण व्यक्तिवाद व समुदायवाद ही है।

1.54 समुदायवाद, व्यक्तिवाद की परेशानी ही विशेषत: दासता है।

1.55 दासता मानव को स्वीकार नहीं है। विशेषता एक मान्यता है।

1.56 मान्यतायें प्रमाण नहीं हो पाती। माने हुए को जानना आवश्यक है।

1.57 जाने हुये को मानना, माने हुये को जानना ही मानव की आवश्यकता है। यही समाधान व प्रमाण सूत्र है।

1.58 जानने-मानने की सम्पूर्ण वस्तु सह-अस्तित्व रूपी अस्तित्व ही है।

1.59 वैचारिक वैविध्यतायें वाद-विवाद, मतभेद की कटुता, दुष्टता, शोषण, युद्ध सहित आतंक रूप में प्रवृत्तियों का प्रदर्शन हुआ। दूसरी ओर अहिंसक प्रवृत्तियाँ और उसकी पुष्टि के लिये पुरजोर

प्रयास अभ्यास हुआ। इसके उपरान्त भी हिंसा व युद्ध प्रवृत्ति का शमन-समाधान-निराकरण नहीं हो पाया।

1.60 मानव अधिकार, विधि व नीतियों का ध्रुवीकरण चाहता है अर्थात् इनमें स्थिरता निश्चयता को पहचानना व निर्वाह करना चाहता है।

1.61 कल्पनाशीलता, कर्म स्वतंत्रता, सुखापेक्षा ही शोध एवं अनुसन्धान का आधार है।

1.62 हर नर-नारी शोध अनुसन्धानपूर्वक कल्पनाशीलता कर्म स्वतंत्रता सहित सुविधा समेत सुखी होने के लिए इच्छुक रहता है। यह समझदारी समाधानपूर्वक व्यवस्था में जीने के क्रम में समृद्धि सहित सुख-शान्ति का अनुभव करना होता है।

1.66 अनुसन्धान अनुभव सहज अनुक्रम विधि की तर्कसंगत स्पष्टता है।

1.67 सभी भाषा, ग्रंथ, पुस्तक और यंत्र-मंत्र सूचना रूप है।

2. जीवन लक्ष्य, मानव लक्ष्य

2.1 हर विचार सूचना का आधार है।

2.2 जीवन मूल्य सुख, शांति, संतोष, आनन्द; मानव-लक्ष्य, समाधान, समृद्धि, अभय (वर्तमान में विश्वास), सह-अस्तित्व में, से, के लिए प्रमाण होना।

2.3 मानव लक्ष्य की सफलता जीवन लक्ष्य की सफलता है।

2.4 सफलता का तात्पर्य जागृति व जागृति का प्रमाण ही है।

2.5 सर्व शुभ मानव लक्ष्य, जीवन लक्ष्य सूत्रों की व्याख्या है।

2.6 जीवन लक्ष्य सार्थक होने के प्रमाण में मानव-लक्ष्य प्रमाणित होना आवश्यक है। मानव लक्ष्य के प्रमाणित होते ही जीवन लक्ष्य सफल होता है यही सर्व शुभ परम्परा है।

2.7 जागृत मानव परम्परा में ही सुख-शांति-संतोष आनन्द रूपी जीवन लक्ष्य और समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व प्रमाण ही मानव का वर्चस्व है।

2.8 मन: स्वस्थता को प्रमाणित करने के उद्देश्य से ही जागृति अवश्यंभावी होता है।

2.9 सुदूर विगत से ही मानव जीवन में मौलिक रूप से सुरक्षित सुखी होने की अपेक्षा बनी रही। इसलिए 'मध्यस्थ-दर्शन' सह-अस्तित्ववाद को अपनाना निश्चित हो गया। इससे सफलता सुनिश्चित है।

2.10 मानवापेक्षा सदा से सुरक्षित, सुखी रहने की कामना है।

2.11 सीमायें इकाईयों में, से, के लिए है।

2.12 मानव-लक्ष्य मानवत्व के योगफल में ही जागृति मूलक शिक्षा, न्याय सुरक्षा, उत्पादन कार्य, विनिमय कार्य स्वास्थ्य संयम कार्य है।

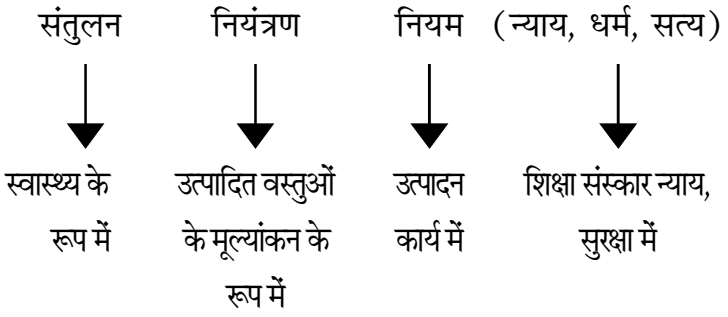

2.13 नियति सहज नियम ही विकास क्रम, विकास, जागृति क्रम, जागृति के अर्थ में है।

2.14 हर मानव जंगल युग से इस वतर्मान तक सुरक्षित रहना चाहता

रहा है।

2.15 सुरक्षित विधि से ही सर्व मानव का अभय सहित जागृति क्रम से जागृति की ओर गतिशील होना स्वाभाविक है।

2.16 समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व सूत्र व्याख्या रूपी आचरण-व्यवहार-कार्य-व्यवस्था ही सर्व शुभ परम्परा है। स्वान्त: सुख वाद, सुविधा संग्रहवाद, व्यक्ति वाद, मनोगत मनोकामना वाद प्रवृत्ति से किया गया कार्य व्यवहार से मानव समाधानित नहीं हुआ, अस्तु सह-अस्तित्व वादी नजरिया से किया गया कार्य-व्यवहार, शिक्षा-संस्कार, संविधान-व्यवस्था ही मानव के लिये शरण है।

2.17 सह-अस्तित्व वादी समझ के अनुसार विवेक व विज्ञान विधि से सदा सत्य, अन्तिम सत्य, परम सत्य समझ में आता है। भ्रम कामनावश क्षणिक सुखाभास घटना रूपी असत्य स्पष्ट होता है। औचित्य क्रम से निश्चयों के आधार पर किया गया कार्य-व्यवहार, फल परिणामों के आधार पर समझदारी की तृप्ति ही जीवन-लक्ष्य व मानव-लक्ष्य की सार्थकता है।

2.18 सर्व मानव शुभ सूत्र को समाधान के अर्थ में प्रयोजित करना चाहते हैं।

2.19 शुभ सर्व मानव में, से, के लिए स्वीकार है।

2.20 सर्व शुभ के लिए कार्य, व्यवहार, विचार जागृतिपूर्वक सार्थक होता है।

2.21 स्वधर्म विधि से सभी विधाओं में, से, के लिए मानव समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व का प्रमाण है। यही सुख, शान्ति, सन्तोष, आनन्द सम्पन्नता है। यही स्वधर्म है।

2.22 मानव लक्ष्य के लिए किए गये कार्य-व्यवहार के आधार पर आहार-विहार व्यवहार भी सर्व शुभ की व्याख्या है।

2.23 स्वयं में, से, के लिए किये गये निरीक्षण परीक्षण से जीवन की पहचान होती है।

2.24 मानवीय आहार को पहचानना सर्व मानव में, से, के लिए आवश्यक है।

2.25 अभिव्यक्ति, संप्रेषणा अन्य को समझ में आना है। यह प्रकाशन सूचनात्मक है।

3. जागृति, जाग्रत परंपरा, जाग्रत मानव

3.1 निर्भ्रमता ही सह-अस्तित्व में जागृति है।

3.2 जागृति मानव में, से, के लिए स्वीकृति है।

3.3 जागृत परम्परा सहज हर नर-नारी जागृति का प्रमाण है।

3.4 जागृति का धारक-वाहक केवल मानव ही है।

3.5 जागृति का प्रमाण ही मानवत्व सहित परिवार व्यवस्था का प्रमाण एवं सर्व मानव में, अखण्ड समाज में सार्वभौम व्यवस्था के रूप में प्राप्त अधिकार है। प्राप्त अधिकार का तात्पर्य विकास क्रम, विकास, जागृति क्रम, जागृति विधि से प्राप्त अधिकार है। यह जागृत-परम्परा प्रदत्त होता है।

3.6 हर मानव की सार्थकता अस्तित्व में जागृतिपूर्वक सफल होना ही सहज है।

3.7 जागृति सर्व मानव का, दूसरी भाषा में हर नर-नारी में, से, के लिए मूल, मौलिक, सर्वप्रथम अधिकार, आवश्यकता है। यही सर्व स्वीकार योग्य सूत्र है।

3.8 सर्व मानव में, से, के लिये जागृति सहज शिक्षा संस्कार नियति

सहज विधि से होता है।

3.9 जागृति हर नर-नारियों में, से, के लिए परम्परा के रूप में स्वत्व है।

3.10 हर नर-नारी नियति विधि से अर्थात् सह-अस्तित्व विधि से नियमित, संतुलित, नियंत्रित होना अनुभव कर सकते हैं, प्रमाणित कर सकते हैं एवं प्रमाणित होना ही जागृति है।

3.11 तर्क संगत पद्धति का तात्पर्य प्रयोजन पूर्वक किया गया क्रिया कार्य व्यवहार में प्रमाणित होने योग्य प्रणाली सहित प्रेरणाकारी क्रिया है।

3.12 जागृति के प्रमाण में ही समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी, भागीदारी और फल परिणाम, समझदारी की पुष्टि में होता है।

3.13 समझदारी सह-अस्तित्व रूपी अस्तित्व दर्शन ज्ञान, जीवन ज्ञान ज्ञाता के रूप में मानवीयता पूर्ण आचरण ज्ञान सार्वभौम व्यवस्था के अर्थ में होना ही है।

3.14 हर मानव में, से, के लिए व्यवस्था में भागीदारी का प्रमाण आचरण ही है।

3.15 आचरण ही हर मानव इकाई का वर्तमान है।

3.16 वर्तमान होने का प्रमाण है आचरण सहित होना।

3.17 जागृति सर्व मानव में, से, के लिए स्वीकृत आवश्यकता है।

3.18 स्वीकृति आवश्यकता में, से, के लिये प्रवर्तनशीलता हर मानव में स्पष्ट है।

3.19 परम्परा जागृत रहने के आधार पर ही मानव पीढ़ी से पीढ़ी प्रेरित व स्फूर्त पाया जाता है।

3.20 मानव कुल में, से, के लिए जागृति अर्थात् समझदारी अक्षुण्ण सतत स्रोत परम्परा के रूप में सर्व सुलभ होता है।

3.21 जागृत परम्परा में ही मानवीय शिक्षा संस्कार, मानवीय आचार संहिता रूपी संविधान मानवीयता पूर्ण परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था सहित सह-अस्तित्व में अनुभव मूलक व्यवहार व प्रयोग उत्पादन कार्य, विनिमय कार्य, स्वास्थ्य संयम कार्य, न्याय सुरक्षा कार्य, मानवीय शिक्षा-संस्कार कार्य सहज प्रमाण सम्पन्नता का बोध सहित स्वयं में विश्वास सम्पन्न होना है।

3.22 जागृत परम्परा में ही जीवन ज्ञान, सह-अस्तित्व दर्शन ज्ञान, मानवीयता पूर्ण आचरण-ज्ञान स्वीकृत रहता है और स्वीकार योग्य शिक्षा संस्कार प्रणाली पद्धति नीति स्पष्ट रहती है।

3.23 जीवन का अध्ययन क्यों और कैसे के साथ होता है। मानव सहज उद्देश्य पूर्ति प्रक्रिया प्रणाली पद्धति का स्पष्ट बोध और अनुभव होता है।

3.24 जागृत जीवन ही दृष्टा, कर्त्ता, भोक्ता है।

3.25 सहजता से जीवन जागृत होने का उपाय सर्व शुभ के अर्थ में सोच-विचार, निर्णय, समझ एवं कार्य-व्यवहार ही है।

3.26 जागृति में, से, के लिये अस्तित्वमूलक मानव केन्द्रित चिन्तन ही वाङ्मय के रूप में 'मध्यस्थ दर्शन' सह-अस्तित्ववाद है।

3.27 सह-अस्तित्व रूपी परम सत्य अनुभव, प्रमाण, बोध, संकल्प, साक्षात्कार, चित्रण, न्याय-धर्म सत्यात्मक तुलन, विश्लेषण सहज आस्वादन पूर्वक चयन क्रियाकलाप ही जागृति पूर्ण जीवन मानसिकता है।

3.28 जागृति पूर्ण जीवन मानसिकता ही स्वायत्तता है जो मानव परम्परा में ही प्रमाणित होता है।

3.29 ज्ञानावस्था में मानव भ्रमवश पीड़ित व जागृतिपूर्वक सुखी होना स्पष्ट है।

3.30 जीवन्त मानव सहज मानसिक निर्णयों के आधार पर क्रिया

प्रक्रिया के विश्लेषण से मूलत: मानसिकता स्पष्ट होती है।

3.31 मानव परम्परा की सार्थकता, सफलता जागृति है।

3.32 जागृत परम्परा में, से, के लिये सह-अस्तित्व की समझ सहित परमाणु-अंश, परमाणु, अणु, अणु-रचित रचना, यौगिक क्रिया, रसायन उर्मी, प्राण सूत्र, प्राण कोषा, प्राण कोषाओं से रचित रचना बीज-वृक्ष विधियों के विकास क्रम सार्थक होना स्पष्ट होता है और परमाणु में विकास, गठन पूर्णता, जीवन पद, जीवनी क्रम, जीवन जागृति क्रम, जागृति स्पष्ट होती है।

3.33 जागृत मानव परम्परा में ही भौतिक, रासायनिक एवं जीवन क्रियायें सह-अस्तित्व में सम्पन्न होती हुई जागृत मानव समझा रहता ही है।

3.34 जागृति हर मानव में, से, के लिए मौलिक अधिकार हैं।

3.35 जागृति ही मानव में, से, के लिये मौलिक स्वत्व हैं।

3.36 चारों अवस्थाओं के साथ ही मानव का होना स्पष्ट है। जीने के लिये जागृति आवश्यक है।

3.37 हर मानव का अभिव्यक्ति संप्रेषणा और प्रकाशन में जागृति या भ्रम स्पष्ट होता है।

3.38 हर नर–नारी जागृत होना व रहना चाहते हैं।

3.39 हर नर–नारी जागृति क्रम में भ्रमित तथा जागृति पूर्ण विधि से प्रमाणित होते हैं।

3.40 हर मानव को सदा जागृति में संपन्न होने वाली आशा, विचार, इच्छा, संकल्प, प्रमाण, अनुभव बोध, साक्षात्कार, तुलन–आस्वादन क्रियाओं की पहचान होना है। क्रियाओं को पहचानना ही जीवन की सम्पूर्ण पहचान है।

3.41 मन वृत्ति में, वृत्ति चित्त में, चित्त बुद्धि में, बुद्धि आत्मा में और आत्मा सह–अस्तित्व में अनुभूत होना ही 'स्व' निरीक्षण परीक्षण है।

3.42 जागृत मानव परिभाषा सूत्र के आधार पर मानवीयता सहज व्याख्या है।

3.43 मानव ही इन पाँच कोटि में गण्य है –
पशु मानव, राक्षस मानव, मानव, देव मानव तथा दिव्य मानव।

3.44 अमानव अथवा भ्रमित मानव दो कोटि में गण्य है यथा – पशु मानव और राक्षस मानव। जागृति पूर्वक मानव, अति मानवीयता पूर्वक जागृति पूर्णता के अर्थ में देव व दिव्य मानव गण्य है।

3.45 अमानव पर–धन, पर–नारी/पर–पुरुष, पर–पीड़ात्मक कार्य–व्यवहार, विचार से मुक्त नहीं हो सकता है।

3.46 जागृत मानव ही स्व–धन, स्व–नारी/स्व–पुरुष, दया पूर्ण कार्य–व्यवहार में प्रवृत्त और प्रमाणित होता है। यही मानवीय चरित्र का वैभव है।

3.47 जागृत मानव ही समाधानित एवं समृद्ध होता है।

3.48 जागृत मानव से देव मानव, देव मानव से दिव्य मानव श्रेष्ठ परंपरा है। भ्रमित अमानव के लिये जागृत मानव श्रेष्ठ है इस क्रम में श्रेष्ठता का सम्मान विधि स्पष्ट है।

3.49 दिव्य मानव और देव मानव जागृति पूर्णता को प्रमाणित करते हुए मानवीयता पूर्ण आचरण सहित व्यवस्था में वैभव है।

3.50 मानव, देव मानव, दिव्य मानव का मानवीयता पूर्ण आचरण सहित अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी करना स्वाभाविक है।

3.51 जागृत मानव में न्याय दृष्टि जीवन–ज्ञान प्रधान, धर्म सत्य दृष्टि जन–बल, धन–बल, यश–बल कामना सहित प्रवृत्तियाँ एवं धीरता प्रधान वीरता, उदारता सहज स्वभाव समेत आचरण में स्पष्ट होता है।

3.52 देव मानव पद में वैभवित हर नर–नारी में यश–बल प्रवृत्ति न्याय, धर्म प्रधान सत्य दृष्टि, धीरता, वीरता, उदारता, दया प्रधान स्वभाव, आचरण में प्रमाण सहित अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी स्पष्ट होता है।

3.53 दिव्य मानव पद में हर नर–नारी परम सत्य दृष्टि प्रधान धर्म, अनुभव मूलक सत्य प्रवृत्ति जिसके प्रमाण में ही जीवन–लक्ष्य, मानव लक्ष्य प्रमाणित होता है और दया, कृपा, करूणा प्रधान धीरता, वीरता, उदारता स्पष्ट होती है।

3.54 जागृत मानव रूपी ज्ञानावस्था के अनन्तर देव व दिव्य मानव पद समीचीन रहता है।

3.55 देव मानव पद में हर नर–नारी में जन–धन कामनायें गौण और यश बल कामना प्रधान होती है। इस कारण से मानव का देव मानव का सम्मान करना स्वाभाविक रहता है।

3.56 दिव्य मानव पद में हर नर–नारी जन–धन–यश–बल कामना से मुक्त सह–अस्तित्व रूपी परम सत्य में अनुभूत परम ऐश्वर्य रूपी स्वतंत्रता व स्वराज्य सहज सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी करना स्वाभाविक रहता है।

3.57 समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी परिपक्वता प्रमाण सम्पन्नता ही दिव्य मानव पद सहज ऐश्वर्य और सार्थकता है।

3.58 दिव्य मानव पद में सम्पूर्ण जीवन मूल्य, मानव लक्ष्य प्रमाणित रहता है।

3.59 मानव ही जागृति सहज प्रमाणों का धारक वाहक है।

3.60 मानव व देव मानव क्रिया पूर्णता का प्रमाण है। दिव्य मानव आचरण पूर्णता का प्रमाण है।

3.61 मानवीयता पूर्ण मानव ही 'समझे हुए' को समझाने, 'सीखे हुए' को सिखाने, 'किये हुए' को कराने में प्रमाणित रहता है। यह जागृति का साक्ष्य है।

3.62 'समझा हुए' को समझाने में, से, के लिये। जागृति सहज प्रमाण समाधान के रूप में प्रमाणित होता है। यही मन: स्वस्थता का वर्तमान है।

3.63 'सीखा हुआ' को सिखाने, 'किया हुआ' को कराने में समृद्धि के लिये सम्पन्न होने वाला कर्माभ्यास सहज स्वीकार होता है। यही मनाकार को साकार करने का प्रमाण है।

4. सार्थकता, प्रयोजन, नियति

4.1 विद्यार्थियों की सफलता, सार्थकता – ज्ञान विज्ञान विवेक सम्पन्नता के लिए जिज्ञासा सहित निष्ठा से है।

4.2 सेवक (सहयोगी) की सार्थकता कर्त्तव्य से है।

4.3 स्वामी (साथी) की सार्थकता, दायित्व निर्वाह करने से है।

4.4 उत्पादन में सार्थकता, सामान्य आकांक्षा व महत्वाकांक्षा संबंधी वस्तुओं से समृद्ध होने के लिए प्रयुक्त कुशलता, निपुणता पाण्डित्य से है।

4.5 न्याय सुरक्षा कार्य की सार्थकता उभय अथवा परस्पर तृप्ति के अर्थ में है।

4.6 स्वास्थ्य संयम कार्य सार्थकता, जागृति को अभिव्यक्त करने के अर्थ में है।

4.7 समझदारी की सार्थकता सर्वतोमुखी समाधान सहज प्रवृत्तियों के रूप में और कार्य-व्यवहार के रूप में है।

4.8 ईमानदारी का प्रयोजन नियम, नियंत्रण, संतुलन, न्याय, समाधान, सत्य में विश्वास व इसकी निरन्तरता का प्रमाण है।

4.9 स्वयं में विश्वास का प्रयोजन जाग्रति सहज अक्षुण्णता (निरंतरता) के अर्थ में है।

4.10 श्रेष्ठता सहज सम्मान का प्रयोजन मूल्यांकन परस्परता में तृप्ति, पूरकता व उपयोगता के अर्थ में है।

4.11 प्रतिभा का प्रयोजन स्वायत्तता के अर्थ में, स्वायत्तता का प्रयोजन जागृत परम्परा में समझ कार्य व्यवहार, समझ में निपुणता कुशलता पांडित्य जो प्राप्त रहता है उसे अन्य को समझाने, सिखाने, कराने में विश्वास से है।

4.12 व्यवसाय में स्वावलंबन का प्रयोजन परिवारगत आवश्यकता से अधिक उत्पादन और समृद्धि का प्रमाण है।

4.13 व्यवहार में सामाजिक होने का प्रयोजन अखण्ड समाज व सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी है।

4.14 अखण्ड समाज व सामाजिकता का प्रयोजन, समाधान समृद्धि अभयता सह-अस्तित्व सहज प्रमाण परंपरा है।

4.15 सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी का प्रयोजन समाधान समद्धि अभय सह-अस्तित्व सहज प्रमाण है।

4.16 समाधान का प्रयोजन सुख है।

4.17 समाधान समृद्धि का प्रयोजन सुख शान्ति है।

4.18 समाधान समृद्धि अभय का प्रयोजन सुख शान्ति सन्तोष है।

4.19 समाधान समृद्धि अभय सह-अस्तित्व का प्रयोजन सुख, शान्ति, सन्तोष, आनन्द है।

4.20 आनन्द का प्रयोजन सह-अस्तित्व में, से, के लिए अनुभव सहज प्रमाण है।

4.21 संतोष का प्रयोजन अनुभव सहज प्रमाण बोध और अभिव्यक्ति होने का संकल्प है।

4.22 शांति का प्रयोजन अनुभव सहज प्रमाण बोध, संकल्प का साक्षात्कार चित्रण अभिव्यक्ति सम्प्रेषण प्रमाण है।

4.23 सुख का प्रयोजन अनुभव सहज प्रमाण बोध, संकल्प, साक्षात्कार, चित्रण व तुलन, विश्लेषण अभिव्यक्ति और संप्रेषण प्रकाशन है।

4.24 आस्वादन का प्रयोजन अनुभव सहज प्रमाण, बोध, संकल्प, साक्षात्कार, तुलन, विश्लेषणपूर्वक निश्चित मूल्यों में तादात्मता, तदाकार, तदरूप विधि से मूल्यों का आस्वादनपूर्वक सम्बन्धों का चयन रूप में प्रमाण अभिव्यक्ति सम्प्रेषण प्रकाशन है।

4.25 संवेदनाओं का प्रयोजन संज्ञानीयता सहज विधि से नियंत्रित रहना है।

4.26 संज्ञानीयता का प्रयोजन जागृति सहज प्रमाण है।

4.27 जागृति का प्रयोजन मानवत्व सहित सह-अस्तित्व सहज प्रमाण परम्परा में ही भौतिक रासायनिक वस्तुओं का सदुपयोग प्रयोजनशील होना और जीवन क्रिया तथा जागृति को प्रमाणित करना और मूल्यांकन करना है।

4.28 भौतिक रासायनिक वस्तु का उपयोग, सदुपयोग प्रयोजन का प्रमाण शरीर पोषण, संरक्षण समाज गति में नियोजन है।

4.29 सदुपयोग का प्रयोजन पूरकता का प्रमाण है।

4.30 प्रमाणशीलता का साक्ष्य आवर्तनशीलता व समृद्धि करण में नियोजन है।

4.31 आवर्तनशीलता का प्रयोजन, बार-बार घटित होना है।

यथा:- संगठन विघटन, विघटन-संगठन	रचना विरचना
मृदा, पाषाण, मणि धातु की ओर	विरचना-रचना
मणि धातु, मृदा पाषाण की ओर	बीज वृक्ष की ओर
	वृक्ष बीज की ओर

4.32 सार्वभौमता का प्रयोजन मानव इकाई अथवा ज्ञानावस्था रूपी इकाई में, से, के लिये ज्ञान-विवेक-विज्ञान विधा से स्वीकृति सहज पूरकता और दर्शन सहित विचार व्यवस्था में भागीदारी सहजतावश सार्वभौमता अखण्डता समीचीन हैं।

4.33 सर्व मानव में, से, के लिये जागृति सहज समझ विवेक, विज्ञान, योजना पूर्वक किया गया कार्य व्यवहार, अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी ही नियति है।

4.34 नियति = सह-अस्तित्व सहज नियम, नियंत्रण संतुलन पूर्वक विकास और जागृति मानव में प्रमाणित होती है, यही नियति है। इसके विपरीत में मानव जो कुछ भी सोचता या करता आया है वह केवल जनसंख्या को बढ़ाना अथवा घटाना, भोग उपभोग मानसिकता पूर्वक द्रोह, विद्रोह, शोषण, युद्ध, आतंक, क्षोभ, पीड़ाओं के अम्बार से जूझना है।

4.35 सह-अस्तित्व का नित्य प्रभावी हो जाना ही नियति है।

4.36 नित्य वर्तमान ही सह-अस्तित्व है।

4.37 नियति विधि से परिवर्तन परिणाम होते हैं। फलतः विकास व जागृति प्रमाणित होता है।

4.38 नियति नित्य प्रभावी है। यह वर्तमान है।

4.39 ज्ञानावस्था नियति क्रम में प्रमाणित वैभव है।

4.40 सर्व मानव का मानवत्व सहित व्यवस्था परिवार में प्रमाणित होना और स्वराज्य मूलक परिवार व्यवस्था में भागीदारी करने के रूप में स्पष्ट होता है।

4.41 समाधान, समृद्धि, अभय सहित सह-अस्तित्व में प्रमाणित होना समाधान, समृद्धि सहित सौभाग्य है।

5. सह-अस्तित्व, व्यवस्था

5.1 नियति, नियम, नियंत्रण, सन्तुलन, न्याय, धर्म, सत्य रूपी सह-अस्तित्व सूत्र है।

5.2 सह-अस्तित्व ही परम सत्य है।

5.3 सह-अस्तित्व में, से, के लिए नियम, नियंत्रण, न्याय व धर्म वर्तमान प्रकाशमान है।

5.4 अस्तित्व में सह-अस्तित्व नित्य वर्तमान है।

5.5 सह-अस्तित्व अनादि और अव्यय है।

5.6 सह-अस्तित्व अनादि, शाश्वत, अनन्त और व्यापक है।

5.7 सत्ता में सम्पृक्त प्रकृति ही चार अवस्थाओं व पदों में गण्य है।

5.8 सह-अस्तित्व में भौतिक, रासायनिक व जीवन क्रियाकलाप ही विकास क्रम, विकास जागृति क्रम, जागृति में प्रमाण है। जीव शरीर और मानव शरीर भी प्राण कोशाओं से रचित रहता है। इसकी विरचना भी होती है। इसमें से रचना को जन्म विरचना को मृत्यु कहा जाता है।

5.9 पदार्थावस्था में संगठन विघटन एवं प्राणावस्था में रचना विरचना है।

5.10 रचना-विरचना, विरचना-रचना परिणाम का द्योतक होते हुए मूल पदार्थ का अस्तित्व नित्य वर्तमान है।

5.11 अस्तित्व न ही घटता है न ही बढ़ता है।

5.12 अस्तित्व सहज नित्य वर्तमान ही है। यही स्थिरता, दृढ़ता, निश्चयता, निरन्तरता, नियति सहज सत्य है।

5.13 पूर्ण व पूर्णता ही सह-अस्तित्व रूपी अस्तित्व सहज नित्य वैभव है।

5.14 अस्तित्व सहज वस्तु में, से, के लिये व्यापक वस्तु स्थिति पूर्ण एवं स्थिति पूर्ण सत्ता में सम्पृक्त प्रत्येक एक अपने ही वातावरण सहित सम्पूर्ण होना पाया जाता है।

5.15 सम्पूर्णता ही प्रत्येक एक में, से, के लिए यथा स्थिति है।

5.16 प्रत्येक एक यथास्थिति वश ही 'त्व' सहित व्यवस्था, समग्र व्यवस्था में भागीदारी करते हैं।

5.17 सह-अस्तित्व ही नित्य शाश्वत वर्तमान है।

5.18 सह-अस्तित्व का अर्थ व्यापक वस्तु में ही सम्पूर्ण एक-एक वस्तु नित्य वर्तमान और अविभाज्य है।

5.19 हर मानव एक-एक रूप में गण्य है।

5.20 मानव 'त्व' सहित व्यवस्था होना, समग्र व्यवस्था में भागीदारी सहज स्पष्टता है और पदार्थावस्था, प्राणावस्था, जीवावस्था में नियम, नियंत्रण, संतुलन पूर्वक व्यवस्था स्पष्ट है।

5.21 व्यवस्था नियति सहज है।

5.22 नियति सहजता का तात्पर्य नियम, नियंत्रण, संतुलन के अर्थ में मनुष्येत्तर प्रकृति की व्यवस्था और न्याय-धर्म (समाधान) सत्य सहज ही मनुष्य ध्रुवस्थ है।

5.23 सह-अस्तित्व में, से, के लिए नियति निश्चित वर्तमान है।

5.24 मानवेतर प्रकृति नियम, नियंत्रण, सन्तुलनपूरक विधि से 'त्व' सहित व्यवस्था है।

5.25 सम्बन्धों की पहचान के आधार पर हर नर-नारी नियंत्रित होना पाया जाता है।

5.26 समझदारीपूर्वक ही नियम नियंत्रण, सन्तुलन, न्याय, समाधान

(धर्म) सत्य है।

5.27 सार्थकता, सफलता की कामना सर्व मानव में है।

5.28 सह-अस्तित्व में प्रत्येक एक सभी ओर प्रकाशमान है। व्यापक वस्तु सभी एक-एक को प्राप्त है क्योंकि सभी अवस्था में सभी इकाइयाँ व्यापक सत्ता में सम्पृक्त हैं।

5.29 व्यापक वस्तुस्थिति पूर्ण है क्योंकि जहाँ इकाइयाँ है और जहाँ इकाइयाँ नहीं है ऐसी उभय स्थिति में व्यापक वस्तु है। व्यापक वस्तु असीमित है और सभी एक-एक वस्तु का सीमित होना स्पष्ट है।

5.30 व्यापक में सम्पृक्तता ही ऊर्जा संपन्नता और क्रियाशीलता है। जीवन जागृति क्रिया सहज पहचान सहित आचरण है।

5.31 परस्पर पहचान सम्बन्ध व मूल्य का निर्वाह, जागृति का द्योतक है ।

5.32 जड़ प्रकृति में कार्य सीमायें जो जितना लम्बा-चौड़ा-ऊँचा होता है जैसा एक परमाणु एक धरती, उतना ही विस्तार कार्यरत रहना, प्रभाव सीमा सम्पन्न रहना, हर इकाइयों में परस्परता में निश्चित अच्छी दूरियाँ होती हैं।

5.33 परस्परता में अच्छी दूरियाँ एक दूसरे के प्रभाव क्षेत्र से मुक्त स्थितियाँ हैं।

5.34 अच्छी दूरी, स्थिति गतियाँ स्वयं स्फूर्त रहती है। परमाणु, अणु, प्राण कोषाओं से रचित रचना, ग्रह-गोल, सौर व्यूह, आकाश गंगा, पदार्थावस्था, प्राणावस्था, जीवावस्था नियंत्रण संतुलन के रूप में होना मानव को विदित होता है। साथ ही यह भी समझ में आता है कि भ्रमित मानव अनियंत्रित है। न्याय समाधान (मानव धर्म) सत्य सहज जागृत परंपरा है।

5.35 न्याय सम्बन्धों की पहचान, मूल्यों का निर्वाह, मूल्यांकन, उभय तृप्ति संतुलन ही है।

5.36 तृप्ति व सन्तुलन ही सर्व मानव में, से, के लिये स्वभाव गति का प्रमाण है।

5.37 सह-अस्तित्व रूप में परम सत्य पूर्वक सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी प्रमाणित होती है।

5.38 सह-अस्तित्व नित्य प्रमाणित और प्रभावी है।

5.39 सह-अस्तित्व में ही समाधान, समृद्धि, अभय अर्थात् वर्तमान में विश्वास सम्पन्नता प्रमाणित होती है।

5.40 सह-अस्तित्व विधि से व्यापक वस्तु में सम्पूर्ण एक-एक वस्तु प्रेरित रहना स्पष्ट हो चुका है।

5.41 व्यापक वस्तु पारगामी-पारदर्शी होना परम प्रतिष्ठा है। व्यापक वस्तु में सम्पूर्ण एक-एक वस्तु प्रेरित होना सह-अस्तित्व सहज वैभव है।

5.42 प्रत्येक एक वस्तु व्यापक वस्तु में संपृक्तता वश नित्य प्रेरित रहना स्वत्व है। व्यापक वस्तु में पारगामी होने का प्रमाण संपूर्ण प्रकृति में ऊर्जा संपन्नता क्रियाशीलता है, इसलिये सत्ता (व्यापक वस्तु) में संपूर्ण एक-एक वस्तु (जड़-चैतन्य) सम्पृक्त है जिसका दृष्टा जागृत मानव ही है।

5.43 अविनाशीयता सह-अस्तित्व रूप में सदा वर्तमान ही है। सह-अस्तित्व में ही विकास क्रम, विकास जागृति क्रम, जागृति पद अथवा पदों के रूप में स्पष्ट है।

5.44 खनिज, वनस्पति व जीव संसार ऋतु सन्तुलन के रूप में प्राकृतिक नियम और इनकी परस्परता में पूरक, उपयोगिता नियम वर्तमान है। इन तीनों स्वरूपों में विद्यमान सभी इकाइयाँ त्व सहित व्यवस्था व समग्र व्यवस्था में भागीदारी नियम सहज वर्तमान है। यही पूरकता विधि है।

5.45 पूरक विधि से ही उपयोगिता, सदुपयोगिता, प्रयोजनीयता मानव

परम्परा में नित्य वर्तमान है।

5.46 हर मानव में, से, के लिए जागृति जीवन लक्ष्य व्यवस्था मानवत्व और अनुभव में सफल हैं।

5.47 व्यापक वस्तु पारदर्शी, पारगामी, सहज सत्ता, व्यापक है। स्थिति पूर्ण सत्ता में सम्पृक्त प्रकृति स्थितिशील है यही भौतिक रासायनिक और जीवन इकाइयाँ बल सम्पन्न क्रियाशील, परिणामशील, विकास क्रमशील, विकास, जागृतिशील, जागृति व जागृति पूर्ण अवस्था व पदों में नित्य वर्तमान है ।

5.48 पद-भेद से अर्थ-भेद होना प्रमाणित है।

5.49 क्रियाशीलता ही आचरण के रूप में स्पष्ट है।

5.50 श्रम, गति और परिणाम और परिणाम का अमरत्व, श्रम का विश्राम, गति का गन्तव्य के रूप में सम्पूर्ण क्रियायें स्पष्ट हैं।

5.51 सम्पूर्ण क्रियायें सह-अस्तित्व में, से, के लिए ही है।

5.52 अवस्था व पद भेद से आचरण भेद है।

5.53 अस्तित्व में प्राणपद, भ्रान्तिपद, देवपद और दिव्यपद प्रसिद्ध है।

5.54 प्राणपद में पदार्थावस्था से प्राणावस्था विकास व प्राणावस्था से पदार्थावस्था ह्रास क्रम में पूरक विधि से वैभव है।

5.55 विकास व ह्रास क्रम में प्राण-पद चक्र विधि से वर्तमान है। यही भौतिक रासायनिक क्रिया है।

5.56 जीवावस्था में जीवन और शरीर रचना के अनुसार वंशानुषंगीय विधि से कार्यरत रहता है।

5.57 क्रिया-प्रक्रिया-आचरण से ही परस्परता विधि में, से, के लिये प्रत्येक का मूल्यांकन होता है।

6. मानव परंपरा, सर्व मानव

6.1 मानव–परंपरा में हर नर–नारी पीढ़ी दर पीढ़ी मानने के आधार पर और जानने–मानने के आधार पर अपने को परस्परता में पहचानता, निर्वाह करता है जो स्पष्ट है।

6.2 दुर्घटनाओं के आधार पर आधारित सूचनायें सूची बनकर रह जाती हैं, न कि जीने के रूप में परंपरा।

6.3 मानव ही जागृत शिक्षा–संस्कार पूर्वक मानवीय संस्कृति–सभ्यता, विधि–व्यवस्था का धारक–वाहक है। यही मानवीयता पूर्ण परंपरा है।

6.4 भ्रमित मानव–परंपरा में भी शुभ के अर्थ में अथवा सुखी होने की अपेक्षा में समुदाय को सार्वभौमिकता मान लिया है। जागृत मानव में सर्व मानव के आधार पर सार्वभौमिकता को पहचानना होता है। इसका साक्ष्य यही है कि हर देश का राष्ट्रपति किसी सीमित भूखण्ड में, सीमित समुदाय का संबोधन रूप में होना पाया जाता है। हर देश में राष्ट्रपति अखण्डता, सार्वभौमिकता और अक्षुण्णता को दुहराते हैं। यह सर्वविदित है। जब कि जागृत मानव में सर्व मानव के आधार पर सार्वभौमिकता को पहचानना होता है।

6.5 सह–अस्तित्ववादी समझ ही जागृत परम्परा है।

6.6 जागृति ही मानव–परम्परा में निर्वाह सहज मूल प्रवृत्तियों का साक्ष्य है।

6.7 प्रत्येक जागृत मानव (नर–नारी) समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी, भागीदारी का धारक–वाहक है अथवा होना चाहता है। यही मानव–परम्परा की अक्षुण्णता है।

6.8 समझदारी–ईमानदारी रूपी सहज सार्थकता ही जागृत मानव–परंपरा है।

6.9 मानवत्व सहित व्यवस्था समस्त व्यवस्था में भागीदारी सहज स्वीकृति, अभिव्यक्ति की सम्प्रेषणा प्रकाशन प्रमाण है। यही जागृत मानव–परंपरा है।

6.10 सर्व मानव स्वीकृति सहित किया गया कार्य–व्यवहार व्यवस्था का प्रमाणित होना ही सत्य स्वीकृत मानव परम्परा है।

6.11 जागृत परम्परा सर्व मानव में अखण्ड समाज के अर्थ में है।

6.12 सर्व मानव का सम्पूर्ण कार्य–व्यवहार उत्पादन विनिमय, स्वास्थ्य, संयम, न्याय, सुरक्षा, शिक्षा संस्कार सहित अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था में प्रमाण प्रस्तुत करना ही जागृत परम्परा है।

6.13 यथास्थितियों के आधार पर ही विकास व जागृति सहज वैभव

मानव परंपरा में प्रमाणित होता है।

6.14 मानव परम्परा ही जागृति सहज वैभव का धारक वाहक है क्योंकि मानव ज्ञानावस्था की इकाई है।

6.15 ज्ञानावस्था में हर नर-नारी सोच-विचार समझ के आधार पर अपनी पहचान बनाते हुए, जानते मानते हुए देखने को मिलता है।

6.16 हर नर-नारी स्व निर्णय के अनुसार आजीविका पूर्वक कार्य-व्यवहार करने लगता है तब से अपने को समझदार मानना होता है।

6.17 सर्व मानव सुखी होने के अर्थ में ही स्वतंत्र-परतंत्र कार्य-व्यवहार करता है।

6.18 हर मानव में, से, के लिए भी आशा, विचार, इच्छायें स्फूरित होता हुआ स्पष्ट है।

6.19 हर जागृत मानव अनुभव मूलक प्रमाण बोध, संकल्प, साक्षात्कार, चित्रण, तुलन, विश्लेषण और सह-अस्तित्व रूप सत्य सहज आस्वादन पूर्वक चयन क्रिया सम्पन्न होता है।

6.20 हर मानव जागृति पूर्वक मानव-लक्ष्य, जीवन-लक्ष्य सफलता में, से, के लिये शुभ कार्य-व्यवहार पूर्वक उपकार करता है।

6.21 शुभ सर्व मानव में स्वीकृत है।

6.22 शुभ सहज परंपरा ही समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व है।

6.23 सर्व शुभ कार्य, व्यवहार, व्यवस्था, आचरण, विचार ज्ञान-विवेक-विज्ञान ही मानव कुल में, से, के लिए नित्य उत्सव है।

6.24 जीवन लक्ष्य व मानव-लक्ष्य सहज प्रमाण परंपरा ही सर्व शुभ है।

6.25 सर्व शुभ परंपरा में भागीदारी में ही सर्व शुभ सुलभ रहता है।

6.26 सर्व मानव को मानवीयता के आधार पर पहचानना ही अखण्ड समाज के रूप में सर्व शुभ के लिए प्रमाण है।

6.27 सर्व मानव मानवत्व सहित परिवार में प्रमाणित होना और स्वराज्य मूलक परिवार व्यवस्था में भागीदारी करने के रूप में स्पष्ट होता है।

6.28 जागृत मानव परम्परा में हर नर-नारी स्वानुशासनपूर्वक अखण्ड सामाजिकता के अर्थ में अभिव्यक्त रहते हैं और मानवत्व सहित परिवार में व्यवस्था, परिवार मूलक स्वराज्य-व्यवस्था में भागीदारी के रूप में प्रमाणित होता है।

6.29 जागृत परम्परा में हर नर-नारी स्वयं में समग्र अस्तित्व में, परस्पर मानव संबंधों में और मनुष्येत्तर प्रकृति के साथ व्यवस्था सूत्र के आधार पर विश्वास ही स्वयं में विश्वास है।

6.30 जागृत परम्परा में हर नर-नारी नियम-नियंत्रण-संतुलनपूर्वक न्याय-धर्म-सत्याभिव्यक्ति सम्प्रेषणा प्रकाशन में समान है।

6.31 समस्त मानव जागृतिपूर्वक ही व्यवस्था में, से, के लिए प्रमाणित होता है।

6.32 मानव परम्परा में ही सम्बन्धों के आधार पर न्याय प्रमाणित होता है।

6.33 सर्व शुभ में ही स्व-शुभ समाया है। यही अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिन्तन का ध्रुव बिन्दु है।

6.34 सर्व मानव में शुभ ही मानव परम्परा का वैभव है।

6.35 सर्व शुभ का स्रोत नित्य समीचीनता सह-अस्तित्व रूपी अस्तित्व दर्शन सहज समझ लक्ष्य दिशा-निर्णय क्रियाकलाप ही चिन्तन का स्वरूप है। यह साक्षात्कार है।

6.36 मानव परम्परा में ही जागृति सहज परम्परा वैभव है।

6.37 सर्व मानव में, से, के लिए जागृति सहज समझ, विचार, व्यवहार-कार्य को अपनाना आवश्यक है।

6.38 जागृत मानव परम्परा में अनुसन्धान और शोधपूर्वक जागृति का वैभव है।

6.39 दृष्टा-पद मानव-परम्परा में ही प्रमाणित होता है।

6.40 हर नर-नारी अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था अपना जीवन पहचान, व्यवहार-कार्य भागीदारी रूप में सर्वस्वीकृत और सम्पन्न होना पाया जाता है।

6.41 जागृति व जागृति पूर्णता में, से, के लिए मानव परंपरा संतुलित और सुरक्षित है।

6.42 जागृति पूर्वक मानवीयता पूर्ण परम्परा मानव कुल में ही वैभव है।

6.43 जागृत परम्परा निरन्तरता के अर्थ में ही वैभव सम्पन्न है।

6.44 मानव परम्परा सहज घटना, पदार्थ, प्राण, जीवावस्था ये समृद्ध होने के उपरान्त ही ज्ञानावस्था का उदय है।

6.45 सर्व शुभ के अर्थ में ही शुभ कामनायें विचार व्यवहारपूर्वक प्रमाण है।

6.46 सर्व मानव ज्ञानावस्था सहज इकाई है।

6.47 मानव ही सम्पूर्ण अध्ययनपूर्वक ज्ञान-विज्ञान-विवेक सम्पन्न होना ही मानवाधिकार स्वत्व है। कार्य-व्यवहार-व्यवस्था व व्यवस्था में भागीदारी सम्पन्न होना जागृत मानव परम्परा में वैभव है।

6.48 मानव परम्परा सौंदर्य, व्यक्तित्व प्रधान जागृति है।

6.49 हर नर-नारी में, से, के लिये समान अधिकार समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी, भागीदारी के रूप में है।

6.50 ज्ञान-विज्ञान-विवेक सम्मत निर्णयवादी कार्य-विचार-मानसिकता सहित समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व-सहज प्रमाण ही सर्व शुभ और परम्परा है, अभिव्यक्ति संप्रेषणा प्रकाशन मानव में, से, के लिए जीता जागता व्यवहार और व्यवस्था में भागीदारी के रूप में स्पष्ट होता है।

6.51 शुभ कामनायें जागृतिपूर्वक मानव-लक्ष्य व आचरण के रूप में प्रमाणित होती हैं।

6.52 मानव परम्परा में ही समस्त प्रकार के प्रवर्तनों के मूल में सुखी होने की आकांक्षा समाई रहती है।

6.53 शुभ की चाह मानव जाति में सहज प्रकाशन है। सर्व शुभ ज्ञान सहज योजना पर्यन्त शोध अनुसन्धान होना स्वाभाविक है।

6.54 अधिकार विधि नैतिकता सहज प्रभाव सहित कार्यक्रम ही व्यवस्था है।

6.55 हर शुभ प्रेरणा मानव में, से, के लिये स्वयं स्फूर्त प्रवृत्त रूप में स्पष्ट है।

7. ज्ञान, समझदारी, अध्ययन, संज्ञानीयता

7.1 परम्परा में विकास-क्रम, विकास और जागृति-क्रम, जागृति सहज-समझ ज्ञान है।

7.2 मानवीयतापूर्ण आचरण सहज-समझ ज्ञान है।

7.3 जानना-मानना ही ज्ञान और उसका सर्व सुलभ होना ही सर्व शुभ ज्ञान है।

7.4 मानव में जानना-मानना ही पहचानना व निर्वाह करने का आधार है।

7.5 ज्ञान-विवेक-विज्ञान समस्त निर्णयवादी कार्य-विचार, मानसिकता सहित अभिव्यक्ति संप्रेषणा-प्रकाशन मानव में, से, के लिए जीता-जागता व्यवहार और व्यवस्था में भागीदारी के रूप में स्पष्ट होता है।

7.6 अभिव्यक्ति सम्प्रेषणापूर्वक समझदारी, ईमानदारी, भागीदारी स्पष्ट होती है और सम्प्रेषणा-प्रकाशनपूर्वक ही हर मानव मानवत्व सहित व्यवस्था व समस्त व्यवस्था में भागीदारी सहज प्रमाणित है।

7.7 सत्ता में सम्पृक्त जड़-चैतन्य सह-अस्तित्व है। अस्तु सह-अस्तित्व

दर्शन-ज्ञान, जीवन-ज्ञान और मानवीयता पूर्ण आचरण-ज्ञान ही सम्पूर्ण ज्ञान है। ज्ञान के आधार पर अथवा ज्ञान सम्मत विधि से मानव-लक्ष्य को पहचानना विवेक है। मानव-लक्ष्य स्वयं में समाधान समृद्धि अभय सह-अस्तित्व सहज प्रमाण है जिसके लिए दिशा निर्धारित कर लेना विज्ञान है।

7.8 समझदारी ही मानव में, से, के लिए अविभाज्य अक्षुण्ण ऐश्वर्य है।

7.9 समझदारी का वैभव सुख, समाधान, समृद्धि, परस्परता में विश्वास और नित्य उत्सव होता ही रहता है। इसके लिए समझदारी, बौद्धिक प्रयोग, विवेकपूर्वक तथा समाधान, समृद्धि, अभय, सह अस्तित्व प्रमाणित होने की विधि से सर्व मानव सुखी होते हैं। इसका प्रयोग न्याय व समाधानपूर्वक-सार्थक सुखी होना पाया जाता है। धन का प्रयोग उदारतापूर्वक करने से सार्थक सुखी होते हैं। बल का प्रयोग दया के साथ जीने देने के रूप में सार्थक होता है। रूप के साथ सच्चरित्रता, यथा - स्व-धन, स्व-नारी, स्व-पुरुष, दयापूर्वक कार्य-व्यवहार विचार से ही सार्थक सुखी होना होता है। यह सर्व शुभ होने की विधि है जो लोक-शिक्षा और शिक्षा-संस्कार पूर्वक सार्थक होता है।

7.10 परस्परता में पूरकता व उपयोगिता पूरकता विधि विदित होना ही यथा स्थिति ज्ञान है।

7.11 यथा स्थिति ज्ञान में ही 'त्व' सहित व्यवस्था, समग्र व्यवस्था में भागीदारी स्पष्ट होती है।

7.12 जीवन–ज्ञान, सह–अस्तित्व दर्शन–ज्ञान, मानवीयता पूर्ण आचरण–ज्ञान का संयुक्त रूप में सम्पूर्ण अध्ययन, बोध और अनुभव होना जागृति है।

7.13 जीवन और शरीर के संयुक्त रूप में मानव का अध्ययन है।

7.14 मानवत्व ज्ञान–विवेक–विज्ञान सम्मत होना, विज्ञान विवेक के आधार पर बोधगम्य होना, फलस्वरूप योजनाओं के आधार पर कार्य–योजना सम्पन्न होना जिसका फल, परिणाम मूल ज्ञान के अनुरूप होना समाधान है।

7.15 सह–अस्तित्व परम सत्य होना ही ज्ञेय है।

7.16 जीवन ज्ञान ही 'स्व' स्वरूप ज्ञान है।

7.17 जीवन–ज्ञान स्वयं में विश्वास का आधार है।

7.18 ज्ञाता पद में मानव में, से, के लिये जीवन–ज्ञान, सह–अस्तित्व दर्शन ज्ञान, मानवीयता पूर्ण आचरण ज्ञान ही सम्पूर्ण ज्ञान है।

7.19 ज्ञान सम्पन्नता ही जागृति दृष्टि–दृष्टा पद की अभिव्यक्ति व

प्रमाण और परम्परा में, से, के लिए त्राण व प्राण है।

7.20 समझदारी जीवन–ज्ञान मानवीयता पूर्ण आचरण–ज्ञान, सह–अस्तित्व रूपी अस्तित्व दर्शन–ज्ञान है।

7.21 समझदारी के अनुसार विवेक–विज्ञान से सम्पन्नता जागृत मानव सहज निर्णय व विचारों के रूप में है।

7.22 जिम्मेदारियाँ सम्बन्धों के आधार हैं।

7.23 भागीदारी अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था में, से, के लिये है।

7.24 मानव में, से, के लिए सह–अस्तित्व ज्ञान–विवेक–विज्ञान पूर्वक ही नित्य व नैसर्गिक और मानव के साथ विधिवत जीना सहज है।

7.25 मानव परम्परा में शुभ कामना सहज है।

7.26 अस्तित्वमूलक मानव केन्द्रित चिन्तन बनाम 'मध्यस्थ–दर्शन' सह–अस्तित्ववाद मानव जीवन–ज्ञान, अस्तित्व दर्शन–ज्ञान, मानवीयता पूर्ण आचरण ज्ञान सम्पन्न होने की सूत्र व व्याख्या है। यह अध्ययन पूर्वक बोध अनुभव सम्पन्न होना समीचीन है।

7.27 सह–अस्तित्ववादी दृष्टि में, से, के लिए सम्पूर्ण अध्ययन है।

7.28 अस्तित्व क्यों? कैसा है? का उत्तर तर्कसंगत विधि से व्यवहार प्रमाण रूप में है। कितना है? का उत्तर – आवश्यकता से अधिक है।

7.29 अस्तित्व कैसा है? सह–अस्तित्व रूप में है।

7.30 क्यों है? का उत्तर विकास–क्रम, विकास, जागृति–क्रम, जागृति के रूप में, से, के लिए वर्तमान ही है।

7.31 सह–अस्तित्व जागृत मानव सहज आवश्यकता से अधिक होना ही जागृति सहज मानवीयता नित्य समीचीन है। इसकी नित्य संभावना स्पष्ट है।

7.32 अस्तित्व कैसा है ? यह चार अवस्था और चार पदों में स्पष्ट है। यही क्यों कैसे का उत्तर है।

7.33 हर मानव 'है' का अध्ययन करता है। 'होना' ही 'है' के रूप में वर्तमान है।

7.34 'होना' और 'है' निरन्तरता के अर्थ में स्पष्ट है निरन्तरता सूत्र अर्थात् व्यापक वस्तु में सम्पृक्त प्रकृति सम्पूर्ण एक–एक अथवा चारों अवस्था, चारों पद सम्पृक्त हैं। यही सम्पूर्ण अस्तित्व है।

7.35 भौतिक रासायनिक और जीवन क्रिया का अध्ययन इनके मूल

में परमाणु ही स्वयं स्फूर्त विधि से क्रियाशील रहने का अध्ययन है।

7.36 जाग्रत मानव ज्ञानावस्था व देव पद में होने के आधार पर, जीवन और शरीर का संयुक्त रूप में अध्ययन और जागृति पूर्ण विधि से जीने का अध्ययन है।

7.37 जागृति अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था में जीने का अध्ययन साथ में जीवन–लक्ष्य, मानव–लक्ष्य, नियति लक्ष्य की सार्थक सूत्र–व्याख्या ज्ञानपूर्वक सफल होने का अध्ययन सुलभ है।

7.38 सर्व शुभ ज्ञान ज्ञान–विज्ञान–विवेक पूर्ण कार्य व्यवहार व्यवस्था, फल परिणाम के फलन में अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था सहज वर्तमान ही अभ्युदय सर्वतोमुखी समाधान समृद्धि अभय सह–अस्तित्व है।

7.39 प्राण–पद, भ्रांत–पद, देव–पद, दिव्य–पद में सम्पूर्ण जड़–चैतन्य प्रकृति विद्यमान है।

7.40 मानव में, से, के लिए अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिन्तन ही समझदारी सहज सम्मान व प्रमाण है।

7.41 अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिन्तन सह–अस्तित्व रूपी अस्तित्व में विकास–क्रम–विकास जागृति–क्रम जागृति समझ में परिपूर्ण

होता है। समझदारी में परिपूर्णता का तात्पर्य मानवत्व सहित व्यवस्था, समग्र व्यवस्था में भागीदारी प्रमाणित होने से है।

7.42 मानव में, से, के लिए सह-अस्तित्व सहज, सम्पूर्ण समझ ही परिपूर्णता है।

7.43 मानव बहु आयामों में प्रवर्तनशील है। इसलिए सह-अस्तित्व सहज प्रमाण होता है।

7.44 सह-अस्तित्व में प्रत्येक इकाई अपनी स्वभाव गति सहज प्रमाण में ही 'त्व' सहित व्यवस्था के रूप में होना अध्ययन गम्य है।

7.45 सह-अस्तित्व सहज विधि सूत्र, नियम-नियंत्रण सन्तुलन-न्याय-धर्म-सत्य सूत्र ही है। जिसे चारों अवस्था व पदों में देखा जा सकता है।

7.46 ज्ञान अवस्था में होने के कारण हर मानव का सह-अस्तित्व में ज्ञान सम्पन्न होना सहज है। समझदारी ही ज्ञान सम्पन्नता है।

7.47 समझदारीपूर्वक ही मानवीयता प्रमाणित होती है। यह परस्परता में स्पष्ट होता है।

7.48 संवेदनायें शब्द, स्पर्श, रूप, रस, गन्धेन्द्रीय के रूप में स्पष्ट है। संज्ञानीयता पूर्वक संवेदनाएं नियंत्रित रहती हैं। संज्ञानीयता के

अभाव में संवेदनायें अनियंत्रित रहती हैं।

7.49 संज्ञानीयतापूर्वक अथवा जागृतिपूर्वक मानवीयता कार्य-व्यवहार व्यवस्था में भागीदारी के रूप में प्रमाणित होती है।

7.50 समझदारी में, से, के लिए अध्ययन कार्यकलाप का सफल होना ही अभ्युदय है।

7.51 समझदारी के अनन्तर प्रमाणित होना ही श्रेय है।

7.52 प्रेय का तात्पर्य चार विषयों के लक्ष्य में किया गया विचार-कार्य-व्यवहार है।

7.53 मानव पद में हर नर-नारी संवेदनाओं का नियंत्रण सहित ऐषणा त्रय प्रवृत्ति सहित व्यवस्था में प्रमाणित होते रहता है।

7.54 मानव ही अस्तित्व में ज्ञानावस्था के पद में प्रतिष्ठा है। इसलिए समझदार होना आवश्यक है।

7.55 ज्ञानावस्था मौलिक रूप में सार्थक, स्थिर, निश्चित वैभव है।

7.56 जागृत मानव ही ज्ञाता पद में है इसलिए ज्ञेय और ज्ञान का धारक-वाहक होना पाया जाता है।

7.57 समाधान ही सुख है। समझदारी पूर्वक समृद्ध-सम्पन्न मानसिकता सहित किया गया श्रम-नियोजन से समृद्धि सुलभ होती है।

7.58 समझदारी सह-अस्तित्व सहज विधि से सर्व सुलभ रहती है।

7.59 तर्कसंगत पद्धति का तात्पर्य प्रयोजनपूर्वक किया गया प्रकिया कार्य-व्यवहार में प्रमाणित होने योग्य प्रणाली सहित प्रेरणाकारी प्रयोजनशील क्रिया है।

8. जीवन, दृष्टापद

8.1 जागृत जीवन ही ज्ञाता है। ज्ञान सम्पन्न होना ही जागृति और मानव कुल में प्रमाण है।

8.2 गठनपूर्णतावश जीवन रूपी परमाणु अमर, अपरिणामी, चैतन्य इकाई, नित्य होने का अध्ययन होता है।

8.3 जाग्रति व जाग्रति पूर्णता है और जीवन नित्य है, क्रिया पूर्णता, आचरण पूर्णता सहित आहार-व्यवहार पूर्वक स्वस्थ शरीर का भी मूल्यांकन होता है।

8.4 जीवन में ही पहचान विचार निश्चयन दृढ़ता प्रमाणों की, सह अस्तित्व में अनुभव सहज प्रमाण, अनुभव का बोध सहज संकल्प न्याय, धर्म-समाधान-सत्य सहज विश्लेषण, मूल्यों का आस्वादन सहित चयनपूर्वक कार्य-व्यवहार समेत अध्ययन है।

8.5 जीवन ज्ञान में मन, वृत्ति, चित्त, बुद्धि, आत्मा के निश्चित क्रियाकलापों का बोध है।

8.6 मन-वृत्ति-चित्त-बुद्धि-आत्मा में परावर्तन प्रत्यावर्तन द्वारा मानव में प्रमाण बोध होता है।

8.7 जीवन में अनुभव प्रमाण का परावर्तन बोध होना प्रमाणों का

नित्य स्रोत है।

8.8 जीवन-जागृति अनुभव सहज प्रयोजन होने का बोध व प्रमाण समाधान है।

8.9 मानव-जीवन्तता का तात्पर्य शरीर जीवित रहने तक है।

8.10 सभी अंग अवयव सहित शरीर को जीवन ही जीवन्तता प्रदान कर स्वस्थ सुरक्षित बनाये रखता है। फलस्वरूप जीवन अपनी जागृति को प्रमाणित करता है।

8.11 मन में कल्पना, वृत्ति में विश्लेषण, चित्त में चित्रण के योगफल में मनाकार साकार होता है।

8.12 सीमायें अवस्था व पदों के आधार पर एक-एक के रूप में वर्तमान है। जीवन नित्य है इसलिए जीवन में आशा व सुख धर्म निश्चित है।

8.13 अस्तित्व धर्म शाश्वत् पदार्थावस्था में द्रष्टव्य है। पुष्टि धर्म देशकालीय प्राणावस्था में स्पष्ट है। आशा धर्म नित्य जीवावस्था में है। मानव में सुख धर्म प्रतिष्ठा स्पष्ट है।

8.14 जीवन-जागृति सहज प्रतिष्ठा है। शरीर रचनानुसार वंश रूप में स्पष्ट है। मानव धर्म सुख है क्योंकि जीवन नित्य है। मानव धर्म

जागृतिपूर्वक प्रमाण व अक्षुण्ण है। जीवन सह-अस्तित्व में अनुभवपूर्वक प्रमाण है। मानव तथा जीवों की शरीर रचना के मूल में रसायन द्रव्य है। रसायन यौगिकता का वैभव है।

8.15 मानना, जानना, पहचानना, निर्वाह कर पाना जीवन और शरीर के संयुक्त रूप में, से, के लिए होता है न कि केवल शरीर या जीवन में, से, के लिए। इसलिए संयुक्त रूप से मानसिकता को परस्परता में पहचानने का आधार है।

8.16 हर मानव समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व में, से, के लिए प्रमाणित रहना ही सर्व शुभ है।

8.17 जागृति ही सम्पूर्ण मानव का सहज वर्चस्व है।

8.18 जीवन में सम्पूर्णता ही जागृति है।

8.19 जीवन वर्चस्व जागृति है।

8.20 जीवन सार्थकता जागृति है।

8.21 जीवन प्रमाण जागृति है।

8.22 जीवन सहज ऐश्वर्य वैभव के रूप में जागृति है।

8.23 जीवन ही जागृति क्रम में अथवा जागृतिपूर्वक होना पाया जाता

है।

8.24 जीना निरन्तर क्रिया-प्रक्रिया है।

8.25 स्व-निरीक्षण परीक्षणपूर्वक ही समझ, जागृति और स्वयं में विश्वास होना पाया जाता है।

8.26 हर नर-नारी में समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी सहज प्रमाण प्रस्तुत करने का समान अधिकार है जो सार्वभौम है। यह अधिकार कायिक, वाचिक, मानसिक, कृत, कारित, अनुमोदित भेदों से प्रमाणित होता है। यही विधि सूत्र है।

8.27 स्व-स्वरूप में विश्वास दृढ़ता ही दृष्टा-पद प्रतिष्ठा है।

8.28 दृष्टा-पद प्रतिष्ठापूर्वक सह-अस्तित्व दर्शन ज्ञान, मानवीय आचरण में, से, के लिए दृढ़ता, प्रक्रिया, प्रयोजन मूल्यांकन होता है।

8.29 दृष्टा-पद ही समझदारी का प्रमाण है।

8.30 समझदारी ईमानदारी का संयुक्त प्रमाण ही ज्ञान-विज्ञान-विवेक सहज प्रमाण है।

8.31 दृष्टा-पद में ही मानवत्व का प्रमाण है।

8.32 समझदारी पूर्ण प्रमाण सम्पन्नता ही दृष्टा पद है। यह परम्परा सहज देन है।

8.33 दृष्टा-पद में ही विवशता परवशता समाप्त होती है और सर्वतोमुखी समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व प्रमाणित होता है।

8.34 दृष्टा-पद में स्वयं स्फूर्त विधिवत प्रवृत्तियाँ कार्य-व्यवहार में प्रमाणित होती हैं।

8.35 उत्पादन-कार्य सम्बन्धों की निर्वाह विधि से किया गया कार्य-व्यवहार व समस्त व्यवस्था में भागीदारी में दृष्टा-पद का प्रमाण स्पष्ट होता है।

8.36 दृष्टा-पद प्रतिष्ठा ही मानवीयता पूर्ण पहचान का आधार है।

8.37 दृष्टा-पद प्रतिष्ठा ही जागृति का प्रमाण है।

8.38 दृष्टा-पद में ही विवेक और विज्ञान का स्पष्ट प्रयोजन प्रमाणित होता है।

8.39 दृष्टा-पद में जागृत मानव दृष्टत्व-ज्ञाता वक्तृत्व सम्पन्न है।

8.40 दृष्टत्व-ज्ञातत्व सहज विधि से स्वत्व अविभाज्य है।

9. अखण्ड समाज – सार्वभौम व्यवस्था

9.1 सह–अस्तित्व सहज विधि से सर्व शुभ ज्ञान, विचार, कार्य, व्यवहार, आचरण ही अखंडता और सार्वभौमिकता का प्रमाण हैं।

9.2 जागृत मानव–परम्परा में सार्थकता का प्रमाण अथवा साक्ष्य अखंड समाज, सार्वभौम व्यवस्था और उसकी निरन्तरता ही अक्षुण्णता है।

9.3 मानव–परम्परा सहज सार्थकता के साक्ष्य में प्रबुद्धता, सम्प्रभुता, प्रभुसत्ता स्पष्ट होना आवश्यक है। यही सार्वभौमता, अखंडता व अक्षुण्णता सहज सूत्र व्याख्या है।

9.4 प्रबुद्धतापूर्ण सत्ता के रूप में अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था ही है। प्रबुद्धता ज्ञान–विज्ञान–विवेक सम्पन्नता का प्रमाण है।

9.5 सम्पूर्ण मानव को अर्थात् हर नर–नारी को एक इकाई के रूप में पहचानना आवश्यक है यह अखण्ड समाज सूत्र है।

9.6 अखण्ड समाज का तात्पर्य सर्व मानव को मानव जाति के रूप में पहचानना समीचीन है।
मानव जाति एक कर्म अनेक
मानव धर्म एक मत अनेक

धरती एक राज्य राष्ट्र अनेक
व्यापक रूप ईश्वर एक देवता अनेक

9.7 मानव लक्ष्य एक समान
जीवन मूल्य एक समान
मानव मूल्य एक समान
स्थापित मूल्य एक समान

9.8 मानव में जीवन रूप में समान
जीवन क्रिया समान
जीवन लक्ष्य समान (जीवन मूल्य के रूप में)
जागृति पूर्ण जीवन प्रवृत्तियाँ समान।

9.9 जाग्रत मानव समाज विधि से अखण्ड समाज है।

9.10 मानवीयता पूर्ण व्यवस्था सार्वभौम है ही।

9.11 सर्व मानव में, से, के लिए परिभाषा समान व्याख्यानुसार कार्य व्यवहार आचरण का फल परिणाम प्रभाव सत्य–न्याय–समाधान नियम, नियंत्रण सन्तुलन के समान है।

9.12 मानव में, से, के लिये समझदारी समान
ईमानदारी समान
जिम्मेदारी समान
भागीदारी का फल परिणाम समान है।

9.13 जागृत मानव (हर नर-नारी) में, से, के लिए अनुभव प्रमाण, समाधान, सत्य, न्याय समान है।

9.14 जागृत मानव में, से, के लिए नियम, नियंत्रण, संतुलन समान है।

9.15 जागृत मानव परम्परा में जीवन सहज अक्षय बल, अक्षय शक्ति की समझ समान है।

9.16 जागृत मानव परम्परा में जीवन ज्ञान समान है।

9.17 जागृत मानव परम्परा में हर नर-नारी में, से, के लिये मौलिकता सहज स्वत्व स्वतंत्रता अधिकार समान है।

9.18 जागृत मानव परम्परा में मूल्य चरित्र नैतिकता सहज समानता है।

9.19 सर्व मानव में, से, के लिए जागृत जीवन समानता व्याख्या सूत्र ही अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था का आधार है।

9.20 जागृत मानव परिभाषा के अर्थ में समान होता है।

9.21 जागृत मानव परिभाषा, व्याख्यानुरूप आचरण में समान और आचरण का प्रयोजन है।

9.22 मानवत्व सहित व्यवस्था व समग्र व्यवस्था में भागीदारी ही

जागृति का प्रमाण है। यह हर नर-नारी में, से, के लिए समान है।

9.23 अखण्ड सामाजिकता की स्वीकृति हर नर-नारी में, से, के लिये होना आवश्यक है।

9.24 व्यवस्था दस सोपानीय विधि से सार्वभौम होना नित्य समीचीन है।

9.25 सम्पूर्ण मानव जाति एक होने के कारण मानव कुल एक फलस्वरूप अखण्ड समाज और अखण्ड सामाजिकता सहज समझदारी का लोक व्यापीकरण आवश्यक है।

9.26 सम्पूर्ण मानव का सार्वभौम लक्ष्य सदा सदा के लिये समान है। यही परम्परा का आधार है।

9.27 सर्व मानव शुभ अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी सम्पन्न होना ही वैभव है।

9.28 सुदूर विगत से मानव परम्परा की गतिविधि, घटनाओं के आंकलन से पता चलता है कि अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था को पहचाना नहीं गया इसलिये सह-अस्तित्ववादी प्रस्ताव प्रस्तुत है।

9.29 अखण्डता सार्वभौमता ही वर्तमान में प्रमाण है।

9.30 मानवीय संस्कृति-सभ्यता-विधि-व्यवस्था ही सार्वभौमता व

अखण्डता की सूत्र व्याख्या है।

9.31 सर्व शुभ कार्य व्यवहार ही अखण्डता सार्वभौमता है। यही मंगल मैत्री सूत्र व्याख्या है।

9.32 समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व सहज प्रमाण ही सर्व शुभ परम्परा है।

9.33 जागृतिपूर्वक अनेक जाति, मत, सम्प्रदाय व धर्म वाले भी अखण्ड समाज के अर्थ में प्रमाणित होना समीचीन है।

9.34 जागृतिपूर्वक जीने वाले हर नर-नारी अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था सूत्र व्याख्या को प्रमाणित करते हैं।

9.35 बहु आयामी प्रवृत्ति ही विविधता का आधार है। जागृतिपूर्वक सभी आयामों में समाधान प्रमाणित होता है यही एकता का आधार है।

9.36 सभी अवस्था में मूल ऊर्जा संपन्नतावश पहचान निर्वाह ही स्वयं स्फूर्त व्यवस्था है।

9.37 सर्व शुभ ज्ञान-विज्ञान, विवेकपूर्ण योजना कार्य-व्यवहारपूर्वक पाई जाने वाली सर्वतोमुखी समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व प्रमाण है। जागृति मानव परम्परा की वैभव व्यवस्था है।

10. स्वराज्य स्वतंत्रता, स्वत्व

10.1 प्रबुद्धता का प्रमाण सह-अस्तित्ववादी, ज्ञान-विज्ञान-विवेकपूर्ण सर्व शुभ संगत समाधान सहज प्रमाण है। संप्रभुता सर्वतोन्मुखी समाधान सम्पन्नता का प्रमाण और प्रभुसत्ता, प्रबुद्धता पूर्ण सत्ता के रूप में अखण्ड-समाज, सार्वभौम-व्यवस्था ही वैभव है। यही स्वतंत्रता और स्वराज्य है।

10.2 स्वराज्य को प्रमाणित करने के लिए स्वयं स्फूर्त रहना ही स्वतंत्रता है। मानवत्व सहित व्यवस्था व समग्र व्यवस्था में भागीदारी करना स्वराज्य है।

10.3 संप्रभुता सर्वतोन्मुखी समाधान सम्पन्नता का प्रमाण है और प्रभुसत्ता प्रबुद्धता पूर्णसत्ता (परम्परा) के रूप में अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था ही वैभव है यही स्वतंत्रता स्वराज्य है।

10.4 स्वतंत्रता ही प्रबुद्धता व प्रभुसत्ता का प्रमाण है। और मानवत्व सहित व्यवस्था व समस्त व्यवस्था में भागीदारी ही प्रभुसत्ता है। यही जागृत मानव-परंपरा है।

10.5 'स्वत्व' ही स्वतंत्रता व अधिकार को प्रमाणित करने का स्रोत है।

10.6 स्वायत्तता स्वयं स्फूर्त स्व-अनुशासन रूपी स्वतंत्रता, स्वराज्य वैभव है।

10.7 जागृत मानव सहज आवश्यकताएं सीमित होना, आवश्यकता से अधिक उत्पादन, फलस्वरूप समृद्ध होना समीचीन है।

10.8 आवश्यकता का निश्चयन परिवार में, से, के लिए होता है।

10.9 हर परिवार में आवश्यकताएं निश्चित होने के कारण ही आवश्यकता से अधिक उत्पादन सहज है।

10.10 हर मानव के लिये अनुभव प्रमाण सम्पन्न होना स्वत्व स्वतंत्रता है।

10.11 स्वत्व के अनुरूप किया गया लक्ष्य व दिशा निर्धारण ही स्वतंत्रता है।

10.12 स्वत्व अविभाज्य सम्पदा है जो वैभव का आधार है।

10.13 स्वतंत्रता स्वयं स्फूर्त विधि से लक्ष्य व दिशा निर्धारण क्रिया है जो आगे-आगे स्पष्ट योजना व प्रमाण कार्य-योजना गति का उदय पूर्वक प्रवृत्ति है।

10.14 स्वायत्ता स्व स्फूर्त विधि से परिवार व्यवस्था ग्राम व्यवस्था में भागीदारी के रूप में स्पष्ट होती है। जागृति सहज प्रमाण है।

10.15 स्वत्व ही अधिकार या अधिकार ही स्वत्व, स्वतंत्रता ही विधि या विधि ही स्वतंत्रता, व्यवस्था ही नैतिकता या नैतिकता ही व्यवस्था है। ऐसा सर्व शुभ सर्व मानव के लिए समीचीन है।

11. ब्रह्म वर्चस्व

11.1 मानवत्व प्रमाणित होना ही प्रज्ञा है। यही सत्यरूपी ब्रह्म वर्चस्व है।

11.2 प्रज्ञा सहज प्रमाण ही ब्रह्म वर्चस्व है। अनुभव सहज प्रमाण साक्षात्कार ही प्रज्ञा है।

11.3 समझदारी की धारक-वाहकता ही वर्चस्व है।

11.4 वर्चस्व ही स्वतंत्रता स्वराज्य के रूप में परम वर्चस्व है।

11.5 मानव में ही वर्चस्वी होने की कामना सदा से रही है जिसका प्रमाण जीवन जागृति व मानसिकता में सफल सार्थक होता है।

11.6 सार्वभौमिकता ही मानव वर्चस्व है। यही ब्रह्म वर्चस्व है।

11.7 व्यक्तिवादी वर्चस्व भी सर्व सुलभ नहीं हुआ। पुरोहित विशेष बड़े-छोटे के चक्कर में ग्रसित हो गए अतएव व्यक्तिवाद मानव वर्चस्व का आधार नहीं हुआ जबकि सार्वभौमिकता ही मानव वर्चस्व का आधार है।

11.8 वर्चस्व सर्व सुलभ होने की पहचान करने की प्रवृत्ति और प्रमाण ही ब्रह्म वर्चस्व है।

11.9 जागृत होना ही ब्रह्म वर्चस्व प्रवृत्ति का आधार है।

11.10 परस्परता में होना ही प्रकाशमानता है परस्परता में पहचान ब्रह्म वर्चस्व है।

11.11 सुख एवं समाधान पूर्वक जीने के लिए मन: स्वस्थता प्रधान आवश्यकता है। इसका प्रमाण स्वयं में ब्रह्म वर्चस्व है।

12. अनुभव-प्रमाण

12.1 हर मानव में, से, के लिए परावर्तन प्रत्यावर्तन के रूप में आवर्तनशीलता स्पष्ट है। इसी आवर्तन प्रक्रिया क्रम में सह-अस्तित्ववादी नियम, नियंत्रण, सन्तुलन, न्याय, धर्म, सर्वतोमुखी समाधान, सह-अस्तित्ववादी परम सत्य अध्ययन विधि से बोधगम्य प्रमाणित होने के संकल्प विधि से अनुभव प्रमाण होना पाया जाता है।

12.2 अनुभव सार्वभौम अक्षुण्ण है जिसके आधार पर ही व्यवहार, प्रमाण, सामाजिक अखण्डता के अर्थ में उत्पादन कार्य, प्रयोग, प्रमाण, समृद्धि के अर्थ में प्रमाणित होना नित्य समीचीन है।

12.3 सर्व शुभ सहज अनुभव ही सुख, शान्ति, संतोष, आनन्द है।

12.4 जीवन वैभव व प्रमाण अनुभवमूलक विधि से प्रमाणित होता है।

12.5 मानवीय-शिक्षा-संस्कार प्रमाणमूलक होना समाधान है।

12.6 सर्व मानव का प्रमाण अनुभव-अभ्यास में है।

12.7 अनुभव प्रमाण ही जागृति है।

12.8 अनुभव व प्रमाणमूलक विधि से ही अनुभवगामी अध्ययन

सुलभ सहज गति प्रभाव है।

12.9 मानव में, से, के लिए अध्ययन आवश्यकता है।

12.10 साक्षात्कार क्रिया के मूल में अनुभव प्रमाण, बोध, संकल्प ही नित्य स्रोत है क्योंकि जीवन में, से, के लिये क्रियाएं वर्तमान हैं।

12.11 सह-अस्तित्व में अनुभव प्रकाश में ही अनुभव बोध साक्षात्कार होता है।

12.12 जीवन में अनुभवमूलक साक्षात्कार क्रिया स्वयं में निरंतर समाधान है।

12.13 अध्ययन का फल परंपरा नियम, नियंत्रण, संतुलन, न्याय, धर्म (समाधान), सत्य बोध क्रियाशीलता ही है। आचरण के रूप में नियम, कार्य व प्रभाव सीमा नियंत्रण, प्रवृत्तियों के रूप में संतुलन, परस्पर तृप्ति के रूप में न्याय, समाधान के रूप में धर्म है। व्यापक में अनन्त नित्य वर्तमान शाश्वत, नित्य वैभव के रूप में सत्य-बोध-अनुभव-व्यवहार प्रमाण हैं।

12.14 अपरिवर्तनीय अभिव्यक्तियाँ अनुभव मूलक है।

12.15 जीवन में, से, के लिये दस क्रियाओं में सामरस्यता अर्थात् अनुभवमूलक विधि सहज प्रमाण ही जागृति है।

12.16 सह-अस्तित्व रूपी अस्तित्व में अनुभव ही सम्पूर्ण ज्ञान है।

12.17 सह-अस्तित्व में, से, के लिये किया गया अनुभव मानव परंपरा में ही प्रमाणित होता है।

12.18 अनुभव मूलक व्यवहार, प्रयोग, क्रियाकलाप ही अभिव्यक्ति है जो व्यवस्था ही है।

12.19 व्यवस्थात्मक प्रमाण व्यवहार है और व्यवस्था में ही संप्रेषणा अभिव्यक्तियाँ प्रमाण रूप में स्पष्ट हैं।

12.20 सह-अस्तित्व में अनुभव ही अभिव्यक्ति सूत्र है।

12.21 सह-अस्तित्व में अनुभव और प्रमाण ही सम्पूर्ण जागृत, जागृत जीवन्तता है।

13. मानव - मानवत्व

13.1 हर मानव अपनी पहचान का विस्तार भी चाहता है।

13.2 मानव में, से, के लिए अखण्डता-सूत्र-व्याख्या ही शरण है।

13.3 मानवीय आहार, विहार, व्यवहार, निष्ठा सहित प्रतिभा सहज प्रमाण के रूप में संतुलन ही व्यक्तित्व है।

13.4 व्यवहार में सामाजिकता का तात्पर्य मानवत्व सहित व्यवस्था व समग्र व्यवस्था में भागीदारी है।

13.5 मानवीयता ही अखण्ड समाज, सार्वभौम व्यवस्था के रूप में नित्य वैभव, समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व है।

13.6 मानव परंपरा में मानवत्व ही जीवन वैभव है।

13.7 मानव जीवन और शरीर का संयुक्त रूप है।

13.8 मानव को अपनी मौलिकता को समझना और प्रमाणित करना आवश्यक है।

13.9 मानव ज्ञानावस्था में होने के कारण ज्ञान, सह-अस्तित्व सहज दर्शन-ज्ञान, सह-अस्तित्व में ही जीवन होने के कारण जीवन-

ज्ञान, मानवीयता पूर्ण आचरण-ज्ञान है। द्रष्टा पद में प्रतिष्ठा सम्पन्न होने के कारण समग्र ज्ञान ऊपर कहे तीन क्रम में स्पष्ट होता है।

13.10 मानव जीवन में सर्वतोमुखी समाधान ज्ञान मूलक विवेक-विज्ञान विधि से प्रमाणित होता है।

13.11 मानवीय संस्कृति सभ्यता का संयुक्त स्वीकृति और निष्ठा सहज आचरण प्रमाण ही मानवीय संस्कार है।

13.12 व्यवस्था में प्रमाणित होना, समग्र व्यवस्था में भागीदारी करना, करने के मूल में दिशा व लक्ष्य निश्चित विचार मानसिकता का रहना जो सर्वतोमुखी समाधान के रूप में स्पष्ट रहता है। ऐसी विचार मानसिकता के मूल में ज्ञान सम्पन्न रहना ही सम्पूर्ण ज्ञान अथवा समझ ही पूर्ण स्वीकृति, पूर्ण स्वीकृति ही विवेक सम्मत विज्ञान, विज्ञान ही विचार, विचार ही सर्वतोमुखी समाधान, यही अभ्युदय सूत्र है जिसके व्यवस्था-क्रम में योजना, कार्य योजना, जिसका फल परिणाम, सह-अस्तित्व ज्ञान सम्मत होना ही मानव संस्कृति सभ्यता का प्रमाण वर्तमान होता है।

13.13 जागृति मानव संस्कृति जीने देने और जीने के अर्थ में सभ्यता के वैभव के अर्थ में है।

13.14 मानव ही न्याय धर्म सत्य सहज समझदारीपूर्वक मानवत्व सहित

व्यवस्था प्रमाणित होना पाया जाता है।

13.15 न्याय समाधान सह-अस्तित्वपूर्वक प्रमाण होना ही जागृति और मानवत्व है।

13.16 मानवत्व जागृति सहज प्रमाण है।

13.17 मानवत्व व्यवस्था सहज सूत्र है।

13.18 मानवत्व मानव परम्परा सहज त्राण व प्राण है अर्थात् स्थिति गति है।

13.19 मानवत्व ही जीवन मूल्य व मानव लक्ष्य का सार्थक सफलतापूर्वक सार्वभौम रूप से वैभवित हाने का नित्य सूत्र व स्त्रोत है। इसलिए हर नर-नरी समझदारीपूर्वक ईमानदारी जिम्मेदारी, भागीदारी सहज विधि है।

13.20 शरीर और जीवन के सह-अस्तित्व में ही मानव इकाई की पहचान है।

13.21 इस धरती पर रासायनिक भौतिक रचनाओं में, से, मानव शरीर रचना सर्वश्रेष्ठ रचना है क्योंकि मानव में, से, के लिये कल्पनाशीलता कर्म स्वतंत्रता आदि मानव समय से होना स्पष्ट है।

13.22 मानव ही अपनी कल्पनाशीलता, कर्म स्वतंत्रता के आधार पर शिला युग, धातु युग, ग्राम कबीला युग तक, ग्राम कबीला युग से राजा राज्य युग तक, राजा राज्य सम्प्रदाय (धर्म) युग से लोकतंत्र गणतंत्र शासन युग तक पहुँचे है और मानव चरित्र मूल्य और नैतिकता से सम्पन्न नहीं हो पाया इसलिये प्रमाण रूप में अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिन्तन 'मध्यस्थ-दर्शन' सह-अस्तित्ववाद प्रस्तुत हो चुका है।

13.23 निरीक्षण परीक्षण सर्वेक्षण क्रियाकलापों को सम्पन्न करने वाला मानव ही है।

13.24 मानव ही सम्पूर्ण आयाम कोण दिशा परिप्रेक्ष्य देशकाल का दृष्टा, ज्ञाता, कर्त्ता, भोक्ता के रूप में प्रमाणित होना ही जागृति है।

13.25 मानव बहु आयामी होने का तात्पर्य समस्त विधाओं में कल्पना, विचार, ज्ञान-विज्ञान, विवेकपूर्वक अभिव्यक्ति, सम्प्रेषण प्रकाशन करता है, करना चाहता है। यह जागृति सहज प्रमाण है।

13.26 मानव में ही बहु आयामी प्रवृत्ति, दृष्टि, कार्य व्यवहार होना पाया जाता है।

13.27 जानने मानने की प्रवृत्ति सर्व मानव में दृष्टव्य है।

13.28 हर मानव शरीर यात्रा के आरंभ समय से ही कल्पनाशीलता और कर्म स्वतंत्र रहता ही है।

13.29 कल्पनाशीलता ही सोच विचार अध्ययन करने का स्रोत है। कर्म स्वतंत्रता ही प्रयोग कार्य व्यवहार करने का आधार है। इसी क्रम में शोध अनुसन्धान परम्परा है।

13.30 मानव के अध्ययन के आधार पर मानवीय संविधान शिक्षा व्यवस्था व उत्पादन कार्य-व्यवहार विधि स्पष्ट होती है।

13.31 मानवत्व हर नर-नारी सहज आचरण में प्रमाणित होता है।

13.32 मानवत्व हर नर-नारी का स्वत्व है।

13.33 मानवत्व हर नर-नारी में समानता का सूत्र है।

13.34 मानवत्व अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था का सूत्र है।

13.35 मानवत्व सर्व मानव का स्वत्व है।

13.36 मानवत्व सर्व मानव का अधिकार है।

13.37 मानवत्व ही मूल्यांकन का आधार है।

13.38 मानवत्व ही परस्परता में संबंध व सम्मान का आधार है।

13.39 मानवत्व ही समानता व श्रेष्ठता का आधार बिन्दु है।

13.40 मानवत्व ही मानव सहज पहचान है।

13.41 मानवत्व शिक्षा संस्कार का सूत्र है।

13.42 मानवत्व मानव परम्परा, अखण्डता, सार्वभौमता, अक्षुण्णता का आधार है।

13.43 मानवत्व मानव परम्परा में जागृति का प्रमाण है।

13.44 मानवत्व मानव में, से, के लिये स्वयं स्फूर्त होने का स्रोत है।

13.45 मानवीय शिक्षा-संस्कार का प्रमाण मानवत्व है।

13.46 समझपूर्वक किया गया व्यवहार कार्य व्यवस्था में ज्ञान-विज्ञान-विवेक का स्पष्ट होना ही मानवीयतापूर्ण परम्परा है।

13.47 मानवीयता पूर्ण आचरण में, से, के लिये ज्ञान-विज्ञान-विवेक प्रमाणित होता है।

13.48 जागृति के मूल में सह-अस्तित्व रूपी अस्तित्व ज्ञान, सह-अस्तित्व में ही जीवन-ज्ञान और मानवीयतापूर्ण आचरण-ज्ञान

सम्पन्नता है।

13.49 मानवत्व ही मानव परम्परा में, से, के लिये सर्वतोमुखी समाधान, समृद्धि, अभय सह-अस्तित्व सहज प्रमाण है।

13.50 मानवत्व मानव में ही प्रमाणित होता है।

13.51 मानसिकता का प्रमाण ही मूल्यांकित होता है।

13.52 हर मानव मूल्यांकन विधि से एक दूसरे को पहिचानता और निर्वाह करता है।

13.53 हर मानव में, से, के लिए जागृति सहज प्रमाण व मूल्यांकनाधिकार सहित स्वत्व स्वतंत्रता ही मौलिकता है।

13.54 मानव में, से, के लिए प्रमाणित व मूल्यांकित करना कराना मौलिक है।

13.55 हर मानव में, से, के लिये जागृति-सहज अधिकार मौलिक है।

13.56 अधिकार ही अनुभव व्यवहार व प्रयोग प्रमाण है।

13.57 मानवीयता पूर्ण विधि से प्रमाणित होना अधिकार है।

13.58 कल्पनाशीलता, कर्म स्वतंत्रता से प्रमाण परंपरा तक अध्ययन कार्य है।

13.59 हर नर-नारी नियंत्रित रहना चाहते हैं।

13.60 जागृति सहज नियमपूर्वक हर नर-नारी नियंत्रित रहते हैं।

13.61 सामाजिक नियम ही स्व-धन, स्वनारी, स्व-पुरुष दयापूर्ण कार्य व्यवहार है।

13.62 हर मानव संतुलित रहना चाहता है। न्यायपूर्वक मानव संतुलित रहता है।

13.63 समाधानपूर्वक अखण्ड समाज के अर्थ में अर्थात् मानवीयतापूर्ण आचरण प्रमाणित होता है।

13.64 मानवीयता ही अखण्ड समाज सूत्र है।

13.65 मानवत्व ही मानव परम्परा में शिक्षा-संस्कार, संविधान और सार्वभौम व्यवस्था सहज सूत्र है।

13.66 मानवत्व मानवीय गुण, स्वभाव, धर्म का संयुक्त अविभाज्य अभिव्यक्ति, सम्प्रेषणा व प्रकाशन है।

13.67 मानवत्व सर्व मानव में, से के लिये समझ के रूप में स्वत्व,

कार्य-व्यवहार में स्वतंत्रता, सार्वभौम व्यवस्था में भागीदारी अधिकार है।

13.68 मानवत्व रूपी स्वत्व के आधार पर ही स्वतंत्रता व अधिकार का प्रमाण होना सहज है।

13.69 सर्व शुभ दृष्टा-ज्ञाता कर्त्ता पद का वैभव यही जागृत मानव परम्परा और मानवत्व है।

13.70 प्रत्येक मानव में, से, के लिये मानवत्व ही वैभव है।

13.71 हर जागृत मानव का सम्पूर्ण कार्य-व्यवहार सर्व शुभ सूत्र की व्याख्या है।

13.72 सर्व शुभ के अर्थ में ही मानव सहज परिभाषा मानवीयता की व्याख्या, मानवीयता पूर्ण आचरण संविधान सह-अस्तित्ववादी दृष्टिकोण से शिक्षा संस्कार सुलभ है।

13.73 माानवीय शिक्षा संस्कार ही जागृत परम्परा में, से, के लिये सार्थक सूत्र व्याख्या है।

13.74 मानवीयता मानव के लिये नित्य समीचीन है।

13.75 सर्व मानव में मन: स्वस्थता स्वयं स्फूर्त विधि से स्वयं व्यवस्था,

समग्र व्यवस्था में भागीदारी स्वयं स्फूर्त क्रम से सम्पन्न होता है।

13.76 मानव में, से, के लिये सह-अस्तित्व सहज सम्पूर्ण समझ ही परिपूर्णता है।

13.77 मानवीयतापूर्ण आचरण व्यवस्था के रूप में प्रमाणित होता है। यही मानवत्व सहित व्यवस्था तथा समग्र व्यवस्था में भागीदारी की सूत्र व्याख्या है।

13.78 जीवन मर्यादा मानवत्व सहित परिवार व्यवस्था और समग्र व्यवस्था में भागीदारी है। मर्यादा का तात्पर्य जागृति, उसका प्रमाण ही मानवीयतापूर्ण आचरण है।

13.79 नियमित प्रवृत्ति व कार्य-व्यवहार, नैतिकता तन-मन-धन रूपी अर्थ का सदुपयोग और सुरक्षा ही है।

13.80 जागृत मानव सहज कार्य-व्यवहार आचरण ही प्रधानत: मानवीय आचार संहिता रूपी संविधान का मूल सूत्र है जिसकी व्याख्या में सभी आयामों, कोणों देश-दिशा का स्पष्ट होना ही सम्पूर्ण संविधान है।

13.81 मानवीयता ही मानवत्व है।

13.82 मानवीयता जागृति सहज प्रमाण परम्परा है।

13.83 जानना मानना सम्बन्ध में मूल्य निर्वाह
मानना जानना मूल्यांकन
पहचानना.....उभय तृप्ति सन्तुलन
निर्वाह जीवन्त.....नियंत्रण

13.84 हर मानव में समझदारी होना ही मानवीयता पूर्ण आचरण स्पष्ट होता है।

13.85 विधि के आधार पर नैतिकता तन-मन-धन रूपी अर्थ का सुदपयोग और सुरक्षा के रूप में प्रमाणित होता है।

13.86 अधिकार विधि सम्पन्नता ही मानवत्व है।

13.87 मानवत्व सहित नैतिकतापूर्वक, कार्य-व्यवहार समेत परिवार व्यवस्था, समग्र व्यवस्था में भागीदारी नैतिकता सहज प्रमाण है।

13.88 जाग्रतिपूर्वक जीने का अधिकार, विधि व नैतिकता से संयुक्त अभिव्यक्ति संप्रेषणा प्रकाशन मानवत्व है।

14. मानवत्व सहज प्रमाण सूत्र

14.1 सह अस्तित्व में अनुभव सहित प्रमाणित होना = जागृति और मानवत्व है।

14.2 अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था स्वीकृत प्रमाण होना मानवत्व है।

14.3 मानवत्व :-
(अ) मानवीयता पूर्ण आचरण,
(ब) परिवार व्यवस्था में समाधान व समृद्धि के रूप में प्रमाण।

14.4 व्यवस्था में भागीदारी मानवत्व है। मूल्य चरित्र नैतिकता की अभिव्यक्ति सम्प्रेणा प्रकाशन मानवत्व है।

14.5 आचरण :- स्व-धन, स्वनारी, स्वपुरुष, दया पूर्ण कार्य व्यवहार, सम्बन्धों की पहचान, मूल्यों का निर्वाह व मूल्यांकन, उभय तृप्ति, तन-मन-धन रूपी अर्थ का सदुपयोग व सुरक्षा मानवत्व है।

14.6 सह अस्तित्व :- व्यापक वस्तु में सम्पृक्त सम्पूर्ण एक-एक जो चार पद चार अवस्था में हैं।

14.7 अनुभव क्रम से सह अस्तित्व होने का प्रमाण है।

14.8 प्रमाण प्रयोजन के रूप में वर्तमान है।

14.9 होना ही वर्तमान है।

14.10 जागृति - जानना मानना अथवा मानना जानना है।

14.11 अखण्ड समाज, सम्पूर्ण मानव को एक इकाई के रूप में जानना-मानना और प्रमाणित होना मानवत्व है।

14.12 सार्वभौम व्यवस्था सर्व मानव स्वीकृत सहज कार्य नियम-नियंत्रण-संतुलन, न्याय धर्म-सत्य पूर्वक समाधान, समृद्धि, अभय सह-अस्तित्व में, से, के लिये प्रमाण परम्परा मानवत्व है।

14.13 समाज पीढ़ी से पीढ़ी के रूप में परम्परा है। यह जागृति पूर्वक मानवत्व को प्रमाणित करता है।

14.14 सर्व मानव एक इकाई के रूप में अखण्ड समाज अन्यथा समुदाय है। किसी समुदाय ने जिन गतिविधियों को अपनाया है वह अखण्ड-सूत्र व्याख्या नहीं हो पाती है जबकि अखण्ड समाज में भागीदारी मानवत्व है।

14.15 हर नर-नारी का समाधान सम्पन्न रहना मानवत्व है।

14.16 हर मानव परिवार का समाधान, समृद्धि सम्पन्न रहना मानवत्व

है।

14.17 अखण्ड समाज में समाधान, समृद्धि, अभय परम्परा के रूप में होना मानवत्व है।

14.18 सार्वभौम व्यवस्था में समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व परम्परा में सर्व सुलभता प्रमाणित होना मानवत्व है।

14.19 सह-अस्तित्व अनुभव मूलक मानसिकता और कार्य-व्यवहार मानवत्व है।

14.20 हर मानव में, से, के लिये स्वयं में विश्वास, श्रेष्ठता के प्रति सम्मान, प्रतिभा और व्यक्तित्व में संतुलन, व्यवहार में सामाजिक, व्यवसाय में स्वावलम्बी होना मानवत्व है।

14.21 समझे हुए को समझाने में, सीखा हुआ को सिखाने में, किया हुआ को कराने में निष्ठा मानवत्व है।

14.22 श्रेष्ठता का सम्मान सहित मानव, देव, दिव्य मानव का परस्परता में पहचान और स्वयं की निष्ठा को व्यक्त करना अर्थात् अभिव्यक्ति, सम्प्रेषण, प्रकाशन करना मानवत्व है।

14.23 सह-अस्तित्व रूपी अस्तित्व दर्शन ज्ञान, सह-अस्तित्व में जीवन ज्ञान, सह अस्तित्व में मानवीयता पूर्ण आचरण-ज्ञानपूर्वक जीना

मानवत्व है। यही समझदारी सहज प्रमाण है।

14.24 समझदारी के साथ ईमानदारी, ईमानदारी के साथ जिम्मेदारी, जिम्मेदारी के साथ भागीदारी मानवत्व है।

14.25 समझदारी समाधान, समृद्धि, सम्पन्नता सहित उपकार कार्यों को करना मानवत्व है। समझा हुआ को समझाना, सीखा हुआ को सिखाना, किया हुआ को कराना उपकार है।

14.26 सदा-सदा धीरता-वीरता-उदारता, दया-कृपा-करुणा पूर्ण सम्पन्न मानसिकता और परम्परा में कायिक, वाचिक, मानसिक, कृत, कारित, अनुमोदित क्रियाओं में प्रमाणित रहना मानवत्व है।

14.27 सुख, शान्ति, संतोष, आनन्द सहज, निधि को समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व वैभव के रूप में प्रमाणित रहना मानवत्व है।

14.28 कायिक, वाचिक, मानसिक, कृत कारित अनुमोदित क्रिया-कलापों में समाधान सहज जागृति का प्रमाण मानवत्व है।

14.29 परिवार सम्बन्धों को पहचानना, दायित्व व कर्त्तव्यों का निर्वाह करना मानवत्व है।

14.30 समझदारी ईमानदारी ज्ञान-विज्ञान-विवेक के रूप में, ईमानदारी

जिम्मेदारी चारों अवस्थाओं में सम्बन्धों की पहचान के रूप में, जिम्मेदारी भागीदारी नियति सहज नियंत्रण, संतुलन न्याय-धर्म-सत्य सहज विधिपूर्वक समाधान समृद्धि अभय सह-अस्तित्व में, से, के लिये प्रमाणित रहना मानवत्व है।

14.31 सह-अस्तित्व मानव परम्परा में, से, के लिये मनुष्येत्तर प्रकृति के साथ पूरकता, उपयोगिता, ऋतु सन्तुलन सहज प्रभावीकरण मानव और मानव के न्याय व समाधान सहज विधि से समृद्धि अथवा वर्तमान में विश्वास परम्परा के रूप में प्रमाणित होना मानवत्व है।

14.32 हर परिवार समाधान समृद्धिपूर्वक प्रमाणित रहना मानवत्व है।

14.33 परिवार सहज हर सम्बन्धों को जिम्मेदारीपूर्वक निर्वाह करना मानवत्व है।

14.34 सहमतियां सार्वभौम अखण्डता, अक्षुण्णता और प्रबुद्धता, सम्प्रभुता, प्रभुसत्ता सहज दृष्टि से देखना, समझना मानवत्व है।

14.35 सर्वतोमुखी समाधान सहित उपकार प्रवृत्ति ही सहमतियां हैं। यही मानवत्व है।

14.36 सार्वभौमता को धरती के सर्व मानव ने स्वीकारा है अथवा स्वीकारने योग्य है। यह मानवत्व में आशावादिता है।

14.37 अखण्डता का प्रमाण मानवत्व सहित व्यवस्था व समग्र व्यवस्था में भागीदारी है। यह जागृत मानव परम्परा सहज वैभव व मानवत्व है।

14.38 जागृत मानव परम्परा में ही मानवत्व का पहचान, निर्वाह, मूल्यांकन, परस्पर तृप्ति, परस्परता में सन्तुष्टि फलस्वरूप वर्तमान में विश्वास (अभयता) स्पष्ट होता है। यह मानवत्व है।

14.39 जागृति पूर्ण मानव परम्परा में ही शिक्षा-संस्कार, संविधान, व्यवस्था, संस्कृति, सभ्यता के रूप में प्रमुख मानवत्व है।

14.40 सह अस्तित्व में अनुभव प्रमाण ही है यही मानवत्व है।

14.41 सह-अस्तित्व में जीवन-लक्ष्य, मानव लक्ष्य, सार्थक होना जागृति है यह मानवत्व है।

14.42 जागृति सहज निर्धारित लक्ष्य सार्थक होने में, से, के लिये निर्धारित दिशाओं का समझ विचार कार्य व्यवहार प्रमाणित होना मानवत्व है।

14.43 ज्ञान-विज्ञान-विवेक पूर्ण शिक्षा संस्कार ही मानवत्व है।

14.44 धरती, मानव इकाई की अखण्डता का प्रमाण, धरती का भाग विभाग होता नहीं, मानव धर्म अर्थात् सुखी होने के आधार पर

राष्ट्र अखण्ड होने का प्रमाण मानवत्व है।

14.45 मानव सुख धर्मी होने का प्रमाण मानवत्व है।

14.46 मानव शरीर रचना की विधि में असमानता, जीवन स्वरूप और जागृति के आधार पर समानता की समझ व प्रमाण मानवत्व है।

14.47 जागृत मानव परम्परा में सार्वभौमता, अक्षुण्णता, निरन्तरता के अर्थ में है, यह वस्तु के रूप में सह-अस्तित्व रूपी अस्तित्व ही है यह समझ व्यवहार कार्य मानवत्व है।

14.48 प्रबुद्धता समझदारी, ईमानदारी, जिम्मेदारी, भागीदारी है। यह मानवत्व है।

14.49 संप्रभुता का सम्पूर्ण प्रबुद्धता को परम्परा के रूप में, विधि और व्यवस्था के अर्थ में प्रमाणित करना मानवत्व है।

14.50 जागृत मानव परंपरायें प्रभुसत्ता प्रबुद्धता पूर्ण विधि सहज सार्वभौम व्यवस्था रूपी सत्ता ही अक्षुण्ण है। यह मानवत्व है।

14.51 मूलतः प्रबुद्धता का लोक व्यापीकरण ही मानवत्व है।

14.52 सर्व मानव का मानवेत्तर प्रकृति यथा पदार्थ, प्राण, जीव अवस्थाओं में स्थित वस्तुओं के साथ नियम, नियंत्रण, सन्तुलन को बनाये

रखना मानवत्व है।

14.53 आवर्तनशीलता एवं ऋतु सन्तुलन-नियम को बनाये रखना मानवत्व है।

14.54 अनुपातीय रूप में खनिज वनस्पतियों का सुरक्षित किया जाना मानवत्व है। दस सोपानीय परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था, यथा विश्व परिवार सभा से परिवार सभा का दायित्व व कर्तव्य है। परिवार सभा से यह विश्व राज्य परिवार-सभा का कर्त्तव्य और दायित्व है। शिक्षा में इसका सार्थक अध्ययन आवश्यक है। यह मानवत्व है।

14.55 मानवीय शिक्षा-संस्कार का दायित्व-कर्त्तव्य परिवार-सभा से विश्व पारिवार-सभा में दायित्व-कर्त्तव्य रूप में निहित रहता है। इसका निर्वाह योग्य होना मानवीयता है।

14.56 शिक्षा-संस्कार सर्वतोमुखी समाधानकारी ज्ञान-विज्ञान-विवेक सम्पन होने का प्रमाण मानवत्व है। यह परम्परा का कर्त्तव्य हर मानव सन्तान का अधिकार है। यह मानवत्व है।

14.57 जागृत शिक्षा परम्परा अखण्ड सार्वभौम व्यवस्था के अर्थ में सम्पन्न होना मानवत्व है।

14.58 अस्तित्व मूलक मानव केन्द्रित चिन्तन ही 'मध्यस्थ दर्शन' सह-

अस्तित्ववाद है। इस पर शिक्षा संस्कार में सह-अस्तित्व रूपी अस्तित्व दर्शन ज्ञान बोध, जीवन ज्ञान बोध, मानवीयता पूर्ण आचरण ज्ञान बोध परम्परा होना मानवत्व है।

14.59 शिक्षा में, से, के लिये व्यापक वस्तु रूपी ऊर्जा में सम्पूर्ण एक-एक वस्तु सम्पृक्त नित्य वर्तमान क्रियाशील विकास क्रम, विकास, जागृति क्रम, जागृति के रूप में होने की अवधारणा समाहित अनुभव सम्पन्न रहना मानवत्व है।

14.60 सह-अस्तित्ववादी शिक्षा संस्कार में प्रत्येक एक अपने-अपने 'त्व' सहित व्यवस्था है। समग्र व्यवस्था में भागीदारी करने का अध्ययन मानवत्व है।

14.61 मानव सन्तानों का सह-अस्तित्व सहज वैभव को अध्ययनपूर्वक जानने-मानने पहचानने निर्वाह करने योग्य होने का बोध पूर्ण होना मानवत्व है।

14.62 मानवीय शिक्षा-संस्कार में सह-अस्तित्व नित्य प्रमाण होने का बोध सम्पन्न होना, करना-कराना, करने के लिये सहमत होना मानवत्व है।

14.63 शिक्षा में मानवत्व का बोध होना सर्व मानव सन्तान में, से, के लिये मौलिक अधिकार है। यह मानवत्व है।

14.64 मानवत्व का प्रमाण मानवीयता पूर्ण आचरण ही है।

14.65 मानवत्व (मानवीयता पूर्ण आचरण) परिभाषा व्यवस्था और लक्ष्य संबोधन करना, कराना करने के लिये सहमत होना हर मानव में, से, के लिये अधिकार है।

14.66 परिभाषा संगत होने का तात्पर्य मन: स्वस्थता सहज मानसिकता सहित मनाकार को उत्पादन कार्य के ' में परिवार की आवश्यकता से अधिक उत्पादन कार्य में प्रमाणित रहने से है। यह मानवत्व है।

14.67 व्यवस्था संगत होने का तात्पर्य परिवार सहित दस सोपानीय व्यवस्था में भागीदारी कृत-कारित अनुमोदित प्रमाण से है। यह मानवत्व है।

14.68 लक्ष्य संगत होने का तात्पर्य समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व सहज आचरण पूर्वक प्रमाणित होने से है।

14.69 मानव ही बहुआयामी प्रवर्तनशील व प्रमाण होने के कारण ही अनुबन्धन के अर्थ में निबन्ध व प्रबन्ध कार्य सार्थक है। यह मानवत्व है।

14.70 संबंधों को जानना, पहचानना, निर्वाह करना मानवत्व है।

14.71 ज्ञान-विज्ञान-विवेकपूर्वक सम्बन्धों में, से, के लिये जानने-

मानने पहचानने निर्वाह करने के रूप में संकल्पित होना ही अनुबन्ध है। यह मानवत्व है।

14.72 सम्बन्ध नित्य वर्तमान, वर्तमान अस्तित्व, अस्तित्व सह-अस्तित्व, सह अस्तित्व वैभव, वैभव यथा स्थिति गति, स्थिति गति समझदारी वस्तु व प्रयोजन यही सम्बन्ध ज्ञान-विज्ञान-विवेक सम्पन्नता है। यह मानवत्व है।

भूमिः स्वर्गताम् यातु मनुष्यो यातु देवताम्।
धर्मो सफलताम् यातु नित्यम् यातु शुभोदयम्।।

प्रकाशित व प्रकाशनाधीन प्रबन्ध

''च्बहङ्ग्ल ष्गृढ ष्लउ़ ृउढ्ढएग्नङ्क ॐङ्कउ़'' ृउढ हँ ष्उ* 'ष्ठ्ठप्रहर ँउ़' झ्-च्बहङ्ग्लल्र्लें ्ख्र ण्ड्डउढ ँद्रडउङ्कल ्र्लें गउधृढ सर ्. उ़्लम्ल्ु, च्ष्मृढ्ढभृढ ्ख्र* ण्झष्उ* च्बहङ्ग्ल ँउ़ ृढलउ ॐल्ॐल. ँद्रृढलम्र झउ हँश्न ऋ्ढप्रल्प्रल ्ख्र

दर्शन

1. मानव व्यवहार एवं दर्शन (प्रकाशित)
2. मानव अनुभव दर्शन (प्रकाशित)
3. मानव अभ्यास दर्शन (प्रकाशनाधीन)
4. मानव कर्म दर्शन (प्रकाशनाधीन)

शास्त्र

1. व्यवहारवादी समाजशास्त्र (प्रकाशित)
2. आवर्तनशील अर्थचिंतन (प्रकाशित)
3. मानव संचेतनावादी मनोविज्ञान (प्रकाशित)

वाद

1. समाधानात्मक भौतिकवाद (प्रकाशित)
2. व्यवहारात्मक जनवाद (प्रकाशित)
3. अनुभवात्मक अध्यात्मवाद (प्रकाशित)

योजना

1. जीवन विद्या योजना (प्रकाशनाधीन)
2. मानव संचेतनावादी शिक्षा-संस्कार योजना (प्रकाशनाधीन)
3. परिवार मूलक स्वराज्य व्यवस्था योजना (प्रकाशित)

अन्य

1. परिभाषा संहिता (प्रकाशित)
2. जीवन विद्या - एक परिचय (प्रकाशित)
3. अस्तित्व एवं अस्तित्व में परमाणु का विकास (प्रकाशित)
4. मानवीय संविधान का प्रारूप (प्रकाशित)
5. मानवीय आचरण सूत्र (प्रकाशित)

★ जीवन विद्या गीत (लेखक-प्रदीप पूरक) (प्रकाशित)

प्राप्ति - स्थान

श्री एन. एस. पुराणिक (0771) 2428391
(मध्यस्थ-दर्शन वाङ्मय हेतु मुख्य वितरण केन्द्र)
ए-1 प्रोविजन स्टोर्स के पास, न्यू शान्तिनगर,
पो. - शंकरनगर, जिला - रायपुर (म.प्र.)

डॉ. रणसिंह आर्य (01342) 287511
जीवन विद्या प्रतिष्ठान, गोविन्दपुर (खारी) 287060
वाया - झालू, बिजनौर, उ. प्र. - 246728.

श्री राजन शर्मा (07821) 258222
अभ्युदय संस्थान ग्राम - अछोटी (0771) 2250502
जिला - दुर्ग (छत्तीसगढ़)

श्री प्रेम सिंह (05192) 227368
बड़ोखर (खुर्द), जिला-बांदा (उ.प्र.)

श्री यशवंत कुमार सिंधु (स्व. सेनानी) (07673) 32034
द्वारा - अवधेश श्रीवास्तव, आर.बी./22बी,
सिविल लाइन्स - नागौद, जिला-सतना (म.प्र.)

श्री डॉ. आर.आर. गौड़ (011) 26851352
राष्ट्रीय मूल्य शिक्षा केन्द्र, आई.आई.टी. नई दिल्ली 26591908

श्री पवन गुप्ता (0135) 2632904
''सिद्ध'' कैम्पटी गांव, मसूरी (उत्तरांचल) (01376) 224203

श्री अशोक सिरोही (05921) 241479
जीवन विद्या अध्ययन संस्थान
ग्राम - टांडा (बिलारी) जिला-मुरादाबाद (उ.प्र.)

श्री सुरेन्द्र पाठक (0755) 5284235
ई-5/189, अरेरा कालोनी, भोपाल (म.प्र.)

श्री गणेश बागड़िया (0512) 2581669
मानवीय शिक्षा संस्कार संस्थान, कानपुर (उ.प्र.) 2780780

श्री भारत भूषण त्यागी (05736) 271869
चैतन्य शिक्षा संस्थान, ग्रा.-बिहटा (स्याना) जिला-बुलन्दशहर (उ.प्र.)